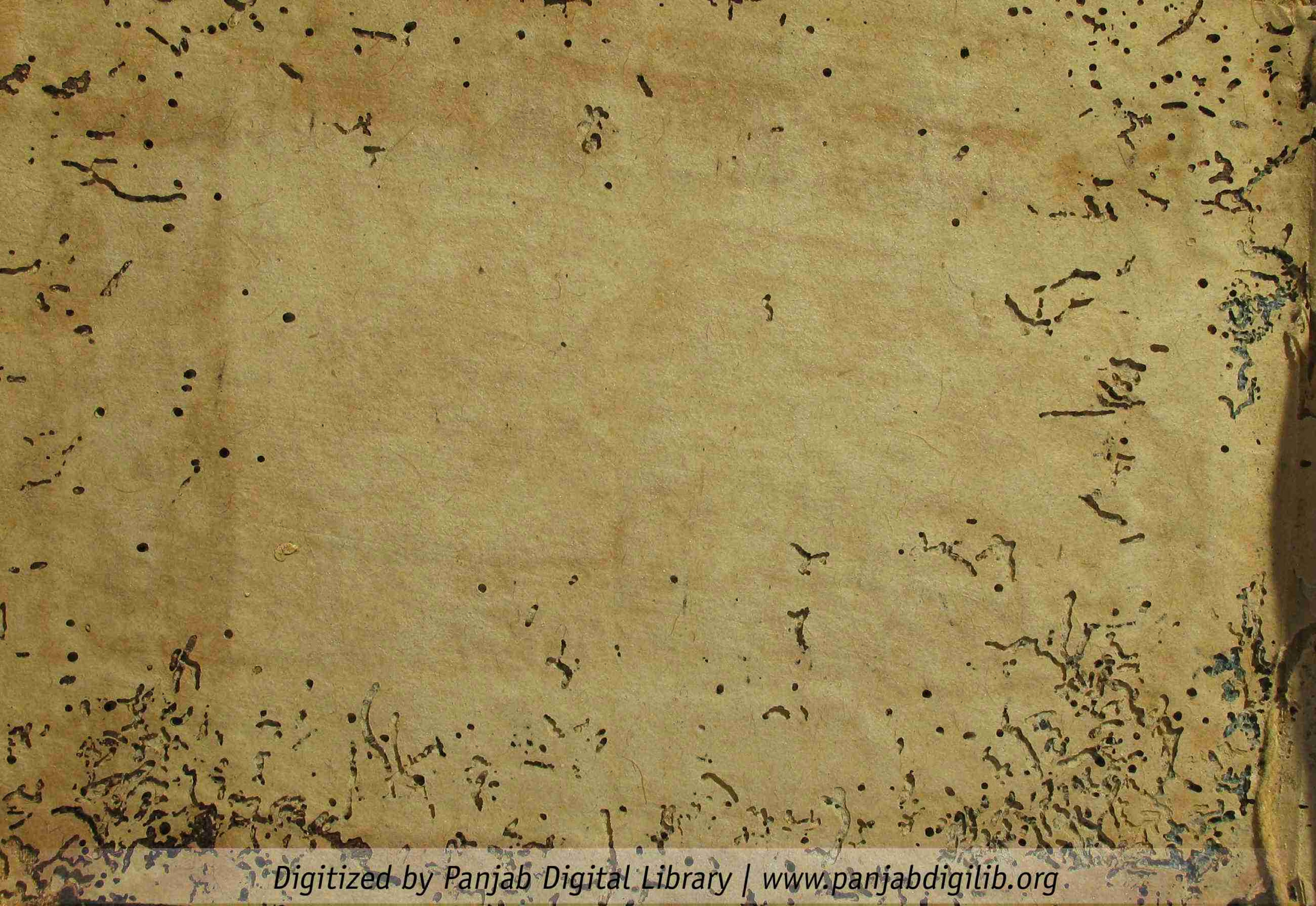


ਸ੍ਰੀ ਭਗਵੰਤ ਸਿੰਘ ਜੀ







अध्यात्म रामायण ।

गङ्गा संहिता (जो लोक स्वण्डः)

प्रातः दर्पणः ।

भाव संहिता ।

नरपति जय चर्चा ।

सर्वार्थ चिन्तामणिः ।

लौलावती ।

ग्रहलाघवम् ।

वर्ष तन्त्रटिका ।

ग्रहलाघव ।

रमल शारङ्ग ।

लौलावती ।

भृगु संहिता (योगात्मक स्वण्डः)

प्राथम्य रामायण ।



Acc. No. — 52208, 52209 Jan











Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



भा० च०) १  
१  
ॐ हावनं वर्ननं रुजतको बिलके गन रुं जमें मन्नमधु  
२  
ॐ तं गुं जसु हारे चारुलता लपटी तह सौ सुबिधों त  
हनी पीय कं ठल गाए धारस जें जमुना जल की चह  
जाए चि चार यही चित प्रायो नीलमन्नो रविहारम  
नी करतार तै श्रीवन को यहरायो ४ दोहा भाषा  
भूषन ग्रंथ को दीय जस वंत नरेस टीका हरि विव  
रत है उदाहरन दे बैस ५ जहां सुचंद्रालो कतें भाषा भ  
षन रुच लक्ष सुलक्षन के रित ह करत सुहरि विव  
ई साइस्य लक्षन उपमानर उपमय की समस्त मोस



१॥ ॐ श्रुतिशीलरुचर्नगुनउपमांजहत्तसुता॥  
 ७ अथउपमांनोयमेयलछन जाकीसमतादीजी  
 ॐ सोसमजोउपमांन जाकीउपमांदीजी ॐ सोउप  
 मेयवषांन ८ अथवाचक्रधर्मलछन सीसेसेस  
 म॥ आदिदेउपमांवाचक्रजोनि उपमांमरुउपमेयमे  
 रहेसुधर्मवषांनि ९ अथउपमांलछन उपमांन  
 रुउपमेयजहवाचक्रधर्मसुचारि पूरनउपमांहीन  
 त्रहसुप्रोपमांविचारि १० वारता उपमांनारिवा  
 सेहोयतहापूरनउपमां जोजहांहेरुदोतींनहोयसो



भाषाचि ॥ लुप्रोपमा अथपूनीयमाजथा अंबुजसेलोयनम्  
मलमधुरसुधासीवांनि सासिसोउज्जलतीयवदनय  
त्रवसेमृदुवांनि १२ वाती अंबुजउपमानसेवाच  
३ लोयनउपमेय अमलसाधारनधर्मजोउपमा  
उपमेयमेरहेसोसाधारनब्रह्मोवै अमलअंबुजओ  
लोयनदोनोमैरहेहे ओसेसुधावांनोआहिमैंजानी  
ओ अथलुप्रोपमालक्षन वाचब्रलुप्रास्त्रधर्मलु  
प्रापुनिजानी धर्मवाचब्रलुप्राव्यउपमेयनमो  
नो उपमानहिपुनिलुप्रवाच्यउपमानहिराखो लो



धर्म उपमान रेक उपमेय हि भाष्यो १२ अर्थ का  
 चक्र साधारन धर्म उपमान इन तीनों को जहो लोय हो  
 रेक उपमेय रहे जथा कमल वदन सुंदर लसें सबी  
 कमल सेवाइ धनु भर बुटी तीय की दिये कंचन बेलि सु  
 होइ १३ वाती कमल वदन कमल सो वदन तो मे सो वा  
 चक्र ता को इहां लोय है कमल से प्रहन पाइ है सो लोय  
 हे धनु भर बुटी इहां वा चक्र धर्म दो नौ को लोय है कंच  
 न बेलि इहां वा चक्र धर्म उपमेय को लोय है भाष्यो मे नव  
 मो मे इ उपमेय लुप्ता भी कहत है यथा विहारी सनसई



भाषा वि

३

योयविष्टुरनकोडुसहडुषहरषजातव्योसार उरजो  
धनलोदेखीयततजतशानद्रहवार १४ बारता उ  
रजोधनउपमांनलोवाचब्रशाराछोडवौधर्मउपमे  
यनायकासोइहांनही पुनःमूल पिबब्रंठीगजगोनि  
बेसुंदरहैमृगनेन जेसेउपमांदीजीजेब्रहतब्रवीरस  
जैन १५ बार्ता पिबब्रंठीपिबब्रंठसोब्रंठहैमनोह  
रहेचरजाबोपिबजोहैसोब्रंठब्रंठउपमांननही पिब  
कोब्रंठउपमांनहैताकोइहांलोयहे उपमांनवाचीस  
बदनहीहैसाधारनधर्मभीनहीहैनायकाविसेयह



नायक १३ यम यन हीं इहां ब्रह्म बल ब्रह्म ठ उय मे यहे उय  
मानवा चक्र धर्म लुग्रा जानी गे इसी तरह गज गौरी  
में जानी गे मग नै नी में जानिली जी गे ओ ई मंग  
हिंदी उय माने चन ब्रह्म देन है ब्रह्म है तहां बिहारि ब्रह्म  
दोहो में बिरोध होइ जया बर जी ते सर में न ब्रह्म  
स देखे मेन हरि नी ब्रह्म नान ते हरि नी ब्रह्म रे मेन १३  
वाती एउय माओ ती है जहां सद सुनत ही उय मां  
मासे ओती उय मां जानी गे अथ प्रार्थी उय मां  
ओ प्रार्थी हिते होत है प्रार्थी उय मां गे न चंद्र सुनु



भा० चि० मुख बां मतु व सुधा बंधु हैं बैन १७ बांती बरो बरि ब्रौ ल  
नु होत है चंद मां की बरो बरि ब्रौ मुख है ऐसे सुधा बंधु  
मैं जानी गे पुनः बिहारी नीच हो जे हर खर है गह गे  
दुख पोत जे तो मां थो मारीं जे ते ते उंच होत १८ बा  
ती जे दुख पो जे दुखी न रह स्या इस गह है अरथ मैं जे  
दसो जानी गे ओती अरथी मे द ओर गंध्यानि मैं  
बहुत है कुबल याने द मैं तौ रेई मे द है अथ मालोय  
माल क्षन शक बौ उप मां बहुत जहां मालोय न सो जे  
न सफरी खं जन कं ज से हे व्यारी बें नैन १९ बांती कुं



मुखल याने दळे मतें मेलो यमा जु हीन हो लुपता मे  
ऐक उपमान होत है ताहि लुप्यो यमा में बहुत उपमा  
न होत है तहां मालो यमा जानी अये अथ रसनो यमा  
रसनो यम जह वरनी अये होत जात उपमान कुलसी  
मति मति सौं सुमन मन ही सौं गुरहां न २० वार्ता कु  
ल उपमे यमति उपमान जानी अये अथ अनन्य  
लक्षण उपमे ही उपमान जव बहुत अनन्य यता  
हि तेरे मुख सौं जगत मै तेरी ई मुख आहि २१ वार्ता  
इहां उपमान उपमे य मुख ही है अथ परजा यो यमा



भा० चि० लछन उपमां लागै परस्पर सो उपमां उपमेय वंजनः  
 हेतु वनै न सेतु वद्ग वंजन सेय २२ वार्ता वंजन की  
 उपमां इग इग की उपमां वंजन अथ प्रतीप लछनः  
 प्रतीप वंजों झरथ उत्तम सो प्रतीप उपमेय वंज हों  
 की जे उपमां न लोयन से प्रवृज वनै मुख से चंद व  
 धानि २३ वार्ता प्रवृज उपमां न सो उपमेय वंज  
 से अथ रजा निजें दुतीय प्रतीप उपमे वंज उपमां न ते  
 आहर जहां न होइ गरव भरति मुख वंज हों चंद हिनी  
 वंजो २४ नाह वंज निजरूप वंजो गर्व वंजें माति बाल



देविसुदुनिन्नरउरवसीतोसौं प्राधिद्रविमाल २४  
वाती इहांचंद्रमा प्रादितेनाइकाकों जनाहरभयो  
अथप्रतीय अन्न जाहरउपमेयतेजवयावेउपमां  
न तीयेनैनन्नडाहतेमंदकांमन्नेवांन २६ वातीने  
नन्नडाहउपमेयतेमैननेवांनउपमानसोतिनको  
अनाहरभयो पुनः पाहनजिनजीयगरवधरिहो  
हीकठिन प्रपार इरजनकोमनदेवीअंतुहितेलाष  
हजार २७ वाती येसेहीनानीअं बोधोप्रतीय  
उपमेवीउपमानजहसमतालाइकांदि अतिउन्न



भाषा चि ॥ मद्गमो न से न हे कौ न बिछि जाहि ३२ वार्ता ओरुइग  
६ नकी मो नकी उपमां देत हैं ॥ अति उन्नम हैं ॥ असे जांनी-  
॥ अथ पंचम व्यर्थ होइ उपमान जहां वर्न नीयल  
बिसार ॥ गज ॥ गौ मृग ब्रधु न रे पंच प्रतीप विचार ॥  
८ अथ रूप कलक्षण हे रूप ब्रदे नाति कौ मिलित ॥  
९ अमे ॥ अधि ब्रनून सम दुहुनि में ती नती न रे मे ॥  
३० वार्ता उपमेय उपमान कौ ऐ ब्रवरि वर्न न ब्ररे जहां  
सो रूप ब्र दोहा उपमान रूप उपमेय में मे दपरे न लख  
३ तासो रूप ब्र ब्रह्म हे स कल सुक बिस सुदा ३ ३३ वार्ता



सौरुष्यब्रह्मेभांतिहोहे ऐकतद्रूपक ऐक्यभेदरूपक सो  
तद्रूपकतीनितरहको ऐक्यप्रतिबतद्रूपक ऐक्यनून  
तद्रूपक तीसरासमतद्रूपक इसीतरहप्रामेदकोभी  
जोनीजे ऐक्यभेदरूपकनेहै अथवाप्रतिबतद्रूपक  
जथा मुखसामिवासासितेप्रतिबतउदितरहतदिनरा  
ति दुतीय सागरतेउपजीनइहब्रमलाअवरसुहाति  
३ वाती मुखसामिबह्यो ऐक्यसामिदसरा राव्यो या  
नेतद्रूपक बाकीजोतिरातिमैहोतिहे याकीजोतिराति  
दिनमेंहै यहमुखमाप्रतिबतइसीतरहप्रामेदको



भा. वि.

याते आधिकत इपक इतीय उपमेय नायका प्रसिद्ध  
नाकी उपसांनलक्ष्मी नासो जुहीहीलक्ष्मी ठहरा इ इ  
हसागरते उयजीनहीं इतनी उपमेयोंमें नूनता भई  
देहा नैन नमल एवेन है ओर नमल निह भों म बा  
ती इहां समत इपक नैन नमल नमल है ओर नमल  
जुही राख्यो है याते त इपक अथ आभे ह गमन न  
रतनी की लेगे नमल लता इह बांम ३३ बाती इह  
बांम नमल लता है नमल लता जुही नही राखी याते अ  
भेद अह गमन नमल है इह आधि नमल अथ नूनता भेद



अधरबोठविंदुमसखीनहीसागरउतयेन नारना  
सागरतेनहीउपजेयहउपमेयेमेननताआईऔर  
भीजानीये अथसमआमेद नुचमुखपंकजविम  
लअतिसरसमुवाप्तप्रसन्न ३८ वारना सरसाईस  
वासता प्रसन्नता मुखमाभीहे ओयेंकजमांभीहेया  
तेसमआमेद अथसमवेरूप विहारी जैरेठोडिगा  
इगहिनैनबटोईमारि चिंक्रिचौधमैरूपठगहासी  
झांसीडारि ३९ वार्ता भाषामेआमेदरूपबहुत  
है तहंरूपकथोरहे अथहिनोन्नितद्रूपक मतिरामे







नेत्रहोइ ब्रह्मदेवतहैं दरसनरूपक्रीयाकौं करहैं  
कंजकौं दरसनरूपक्रीयानहीं संभवैं यातेने  
त्रसौ ऐक्यरूपकरि देखेहैं ताते पारिनाम अल  
भार रूपकमें क्रीयानहीं यामें क्रीयाकरनोहै  
पुनविहारी जबतव होत दिखादिखी भई ॐ  
मीइक्य ॐ आनंदगीतिरीक्षी दीठि अबहोकी  
छोकोइक्य ४२ बती बीछीकोइक्य उपमा  
नसोईइछि उपमेयहैं ब्रह्मदेवहैं अथउल्लेख  
सोउल्लेखजुऐक्यकोबहुसमझेबहुरीति ॐ



भा०/चि०

६

यिनुसुरातलतीयमदनसत्रुनिब्रालपंताति ४३  
पुनः बहुविधिवरनैरेककौबहुविधिसोउल्ले  
ख तरनभ्ररजुनतेजरविमुरगुरवचनविसे  
षि ४४ वाता पहलेमेरेकश्रीकसकौअनेकन  
अनेकजान्यो अथसुमरनभ्रमसंहेह सुमर  
नभ्रमसंहेहलेलछननामप्रकास सुधिआ  
वतिवावरनकीदेखेंसुधानिवास ४५ वाता  
आहीविरहीकौउकैह सुधानिवासरचंद्रमांता  
कौहेषकैमुखनीसाध्यावतिहेतातेस्मरण



लंकारजांनीं भ्रमजया वदनसुधानिध  
जानिबै तुवसगप्रितचक्रोर वारता वद  
नमै सुधानिधि श्रीभ्रमा संदेहजया वदन  
बिछोइहसीतकर बिछोइलभाभोर ४६  
वारता यहवदनओ चंद्रमा आदिमैसंदेह  
विहारी छिनीछिनमै बटवतहोअं वरीभीरमै  
जात काहेजुचलीबिनहोचिते शोठनिहीवि  
चवात ४७ पुनः भ्रांताविहारी रहीदहैंजे  
दिगधरीभरीमथनीयांवारि प्ररतिभरिउल



भां० चि०

१७

टारई नई विलोवन हारि ४८ परस्पर भ्राता  
किं सुख समझी अलिग ही चोच सुआ की आइ  
जं बूझल सुख समझि द्रै पकर न कौल लचाइ  
४९ धारता इहा परस्पर कौ भ्रम है संदेह माति  
सोम धरनि पौर नहि अरु नरग अरु न अघरद  
लमाहं ब्रै धो मूली दुषे हरी ब्रै धो मूली साज  
५० वता अथ सुचाय नुति लघन धर्म डरे  
आरोपते सुचाय नुति जा नि उरपर नही डरो  
जरे वन बलता मूल मानि ५१ वता वर्ननी



वस्तुको धर्म छपावे वा ब्रह्मसमान ओर धर्म को  
 राखे तहां सुखा पंन्होति होति है उरो जको उरो  
 जयनौ छपाइ ब्रह्म न ब्रह्मता ब्रह्म बनो राख्यो  
 यर्गनीय कह्यो ब्रह्म कह्यो ॥ आनत कह्यो  
 ॥ विकृत कह्यो ॥ ऐ चारों नाम उपमे कह्यो  
 हैं पुनः वेई गडगाडे खरी उपट्यो हारही ॥  
 न ॥ आन्यो मोरि मतिंग मनुमारि गुरे रामे न  
 न चर्ता ॥ स्वरको उपटि वी छपाइ ब्रह्म न के  
 उरे रनि मे राख्यो ॥ अथ हेतो पन्हति वस्तुपुरा



भाभचि०

११

बेजगततेहेतोपकृतिहोइ होइसुधाधरना  
हिंयेहंबंदनंसुधाधरसोइ ५३ तीक्ष्मनचंद  
नैरनराविचडवानलहीजोइ ५३ बारताजु  
गतबहीअहेत तीक्ष्मनताहेत निताविधेस  
जनहीयहहेत यहविरहिनीनाइब्रानेचंद  
मांकोछपाइब्र वडवागिठहरायो आसमा  
नरूपसमुद्रमे अथपरजतापकोति परज  
तागुनअोरके ओरविमेंआरोप होइसुधाध  
रनाहियहबंदनसुधाधरअोप ५४ बारता



कोई वस्तु बोध में गुन छपावे चर्न नीय में ठहरावे  
के ली जैत हां पर जत्रा आं नी जे सुधा धर में सु  
धा पनौ छपायो वदन में ठहरायो ऐसे जानी  
ऐं पुनः हाला हल विष है नही विष हेर मा वि  
चारि विष भा वि सिव जागत सुहे पर सेर मा मु  
रारि ५५ सुगम अथ भ्राता पनुति भ्राता  
पनुति वचन ते भ्रम जव पर को जाय ता पन्न  
पकं पजुर है नहि सखी मदन संताप ५६ वा  
नी सखी न्वर की भ्रांती करि नाइ काते प्रहरे न



भाग चिग होना यकसकी सौं ब्रह्म हे हे सखी यह ताप ब्रह्म पन  
१२ ही यह मदन की संताप है तब नाइका के वचन  
ते सखी को भ्रम गयो विहारी के सारे के सारि  
कौन चोर है प्रगल्भ पटाइ लगे जानि नख अन  
अगति कत बोलाति अनयाइ ५७ अथ छे  
काप नुति छे काप नुति जगति सो परसौ बात  
इराइ करत अंधार क्षत की यन ही सखी सीत  
रितु बाइ ५८ बारता नायका की उक्ति मअ  
धर घत करत हौं घर के बाहर सखी रहे हे ते री



पीयाहेतवनाइकावचनरेसखीसौतरितु  
कीवयारिहेअधरधनबरेहेइहांचतुराईसो  
छपायोनाइकाने पुनः विहारी रहीरुकीकैसहु  
चलीआधिकरातिपधारि हरतितापसबछो  
सक्योंउरलागियाखनयारि २६ बारना नाय  
का नायतेकहतिहेतुममेरेउरमेंलागिजैताप  
हरैहैंनववाहिरतेसखीप्रदेहेतुमायेयाहेत  
वनाइकाकहतिहेकैनाहिवयारिहेयहचतुरा  
ईसोछपायोसखीबहुरंगिनिअथछेकैता



भा०/व्य० वापन्हुति केतावापन्हुतिरुक्कोमिसिन्ही  
१३ वरनैः प्रा न तोक्षननै न न ब्रटाक्षमिसिमेदको  
मकेवान ऐ० नारता केतबन्नपटव्याजलठ  
मिसिइत्यादियदनसो जहांसो चन्नौछपावे तहां  
केतवापन्हुतिजानीगेब्रटाक्षमछपायो भो  
मकेवाननित्रीमिसिते पुनः तो मुखरचिमेस  
सिचथाएच्योविरचिविचारि रेखकाठिपरमेव  
मिसिछेबदीयौनिरधारि ई१ वार्तासुगम  
पुनः उडेउल्लूकसुगजनमै मित्रनेजनलखाड



यह दुष्यो ज्योतिषे सुमि सिली यज्जवलन विषु  
बाइ ई २ वारता वेस ई जानी ज्ये ॥ प्रथम रूप क्रांति  
सयोत्रि ॥ जाति सयोत्रि रूप जहाने वलही उ  
पमान क्रन क्रलता पर चंद्रमां धरे धनुष ॥ प्रथम  
ने ई ३ वारता वरनीय कहि ॥ जे जाको वरन न करे  
सो कवितो मे न होइ जा न्यो जाइ तहां रूप क्रांति सयो  
त्रि ॥ हं क्रन क्रलता सीनाइ का चंद्रमां सो मुख धनु  
ष सी भौ है वानस मेने असोध्य वसाना लछना  
मे जा नी ज्ये पुन विहारी इतने उत उत ते उते छ



भा १० चिं० नब्रुन ठिब्रुठहराड जब्रुन परी चक्ररी भई प्रिरा  
१५ वे प्रिरिजाड ई० वाता ईहं चक्ररी तेनाइकाजा  
नीगाड साप न्होय रूपक्रांति होइछ पायोब्रु  
क्रवह साप न्हवठहराड सुधा भरोय हव न्तु  
वचंद्रहोवोराड ई० वाता वाको अरथ रूप  
क्रांतिस योत्रि वरनीय वस्तु में राखि वेनेलीयेब्रो  
ई० नछ पायो होइत हां साप न्हव रूपक्रांतिस यो  
त्रिजांनीये सुधा भरोय हव न्तु वव वन न  
है वचन वरन नीय सो जान्यो जात है यातैसा



यन्मुख्यरूपं प्रतिजां नीञ्चे जहां पावन त्राञ्चो रूपं  
निदो नौ होइ तहां समय नव जां नीञ्चे पुनः मतिरां  
मे मूढ इंदु अरविंद मे भूहे सुधामधुवास वा  
मुखमंजुल अधर मे तिन के प्रगट प्रकास ईई  
अथ भेद कांति सयात्रि अति सयात्रि मे ह्वं  
हे ओरे वरनात जात ओरे हसि बो देखि बो ओ  
रे यात्री वात ई७ वारता ओरे हसि बो बालकी  
वात ओरे पद जहां होइ तहां भेद कांति सयात्रि  
पुनः मतिरां मे ओरे कथुचित वनि चलनि ओ



भा० चि० रेमरुमुसक्यानि ॥ ओरेकधुसुखदेतहेसकेन  
२५ वेनवखानि ६८ अथसंबंधातिसयोत्रि स  
बंधातिसयोत्रि जहांदेत ॥ प्रजोगें जोग यापु-  
रकेमंदिरवहतसासिते ॐ चे लो ग ६६ वाता  
सासिसोमंदिर ॐ चोइह ॥ प्रजोग ताकें जोगठ  
हरायोयातिसंबंधातिजांनीगे पुनः भूपति  
तेरेहानमेजैहेमेरुबिलाइ रहीहेदिनमनमे  
रहोचक्रइकेमुष्टाइ ७० वारता मेरुकोबिला  
नो ॥ प्रजोगताकें जोगवरन्यो पुनः विहारी त्रिय



शाननिक्कीपांहरुं भरतजननः प्रतिग्याप जाड़ी  
 दुसहदसापेरसोतिनहंसंताप ७१ बारना सो  
 तिक्कीं सोतिने दुखते संतापः अजोग जाक्कीं जोग  
 बह्यो अथसंबंधातसयोत्रि अतिसयोत्रि  
 इजो जहां जोगः अजोगवधोन तरुं जां गेब  
 ल्यतरुं अथो पावेसनमान ७२ वार्ता इहां ब्रह्म  
 तरुं कौं लदासनमानं कौं जोगहेताक्कीं अजोगव  
 ह्यो पुनः नगीपं नगीनाचहों नैनातो इनिहारि  
 नहीं सुधारसः आदरों तुववचशुनिमै धारि



भा० चि०  
१६

७३ बारता सुगम अथ अमंति सयोनि अ  
तिसयोनि अमजहां कारन कारज संग तस  
लागत साथ ई धनुष अरि अंग वाता  
इहां धनुष अरि अंग मै ऐक साथ लागत है  
धनुष मै लागन कारन अरि अंग मै लागन का  
ज सोइ नों साथ है अथ चपला योनि चपला  
उनि गुहेत को ग्यान होइ त ही काज भई सुब्रं  
नमुइ कायी याग मन सुन अज ७४ बारता  
वी पावो परे सग मन हेत ता को ग्यान होत ई मु



१। क्रेकन भई नायक परदे सचलों नही पुनः भाग  
 उडावति धन बडो आरे वीया भडा न्न अधीवा  
 हंका गगल गाधी ग ईत डाक ७६ चार्ता बेसही  
 इह भाषा पंजाबी है अथ अत्यंत ताति सयोत्रि  
 अत्यंत ताति सयोत्रि जहां पर वर कम नाहि बांन  
 नय हुचें अंगलौं जरिया हिलें मारि जाहि ७७  
 गार्ता वाहिले बांन अंगो में लागे हेत व अरि मेरे  
 है सो कम नही अथ उत्प्रेक्षाल धून उत्प्रेक्षा  
 संभावना वस्तु हेत फूल लेखि हेतु फूल लेखि

१७  
 ७६  
 ७७  
 ७८  
 ७९  
 ८०  
 ८१  
 ८२  
 ८३  
 ८४  
 ८५  
 ८६  
 ८७  
 ८८  
 ८९  
 ९०  
 ९१  
 ९२  
 ९३  
 ९४  
 ९५  
 ९६  
 ९७  
 ९८  
 ९९  
 १००



भाषाचि

१७

दासपद-जसि द्यासपदमोन वा चक्रजहानक  
हैं तें गम्यो त्वेछाजोन ७६ वार्ता संभावनाक  
हिजे डोलकरनो सो उत्पेक्षा तीन प्रकार ऐकवस्तु  
इसरी हेतु तीसरी प्रल सो वस्तु दो इ ऐक उक्तास्प  
दा दूसरी अनुक्तास्प दा जाकी संभावना की जीजे  
सो संभाव्यमान जाके बिछे संभावन की जै सो प्रा  
स्पद संभावन की बिछे कहि जै सो संभाव्यमान  
जो संभावन की दो र दो नौ रहे तहा उक्तास्पद  
वस्तु उत्पेक्षा जानी जै जहां संभाव्यमन रहे स



भावनाओं विषे न ही रहे क्रिया के जागें मो नों  
विद्यो निश्चे लो इत्यादि वाचक आवे सो अ  
नुक्ता स्पदा वस्तु उत्प्रेक्षा जा नी अं अथ उक्ता  
स्पदा वस्तु त्रेक्षा चक्रवन की विरहा गद्गें धूम  
मनो तमदेख नैन मनो अरवि दहे सरस किना  
सविसेख ८० वारता विरहिनी को वच बइह  
तमन ही हे मनो चक्रवान की विरह अग्नि की धूं  
महें तम विषे संभावना करी हे तम संभावना को  
विषे विरहा गि ब्रह्म की संभावना ता मे प्ररी धूं



भाषाचि० मसंभाव्यमोनवस्तुहै ॥ आस्यदसंभावनाकरिवेष्टो  
 १८ ठिकानातमदोउवस्तुहैं यातेउक्तास्यदवस्तुत्वेषा  
 भईयाहीतरहनेत्रनावैयै ॥ अविंदनित्रीसंभाव  
 नाजानीयेयामैउक्तास्यदवस्तुत्वेषा विहारीमा  
 कराकतिगोवालक्रेडुडलप्रलङ्गतक्रान धस्योसं  
 मरहीयछरमनौ डोढीलसतनिसान ८१ वार्ता  
 इहांडुडलवस्तुविद्यैक्रानक्रेनिसानवस्तुकोसंभा  
 वनाजानौ ॥ अथउक्तास्यदवस्तुत्वेषा रंगत  
 हेमलअंगकौअंधकारनिसिपाय वरयतमा



नो० अंजनाहि टेरि गगनानि सांन २२ वार्ता  
अंधकारको फूल बो जां न्यो सोइहा वर्ननीय  
हे सोइ संभावना को विषय ठेका मोहेइहा तम  
को जो फूल बो सो संभावना को विषय सो नही  
ब्रह्मो तम० अंजना को रगे हेइहा ब्रह्मो अंगगन अंज  
न को वरखे हे तम फूल बो उय मेय अंगगन को  
अंजन वरखनो उय मानता मे० अंतर भूत हे फूल  
बो उय मेय नही ब्रह्मो बखि बो उय मान ब्रह्मो पा  
ही मे० अंतर भूत तम फूल बो विषय जु दानही ब्रह्मो



भा० चि०  
२८

याते अनुक्रास्य हा वस्तु उत्प्रेक्षा प्रथम सुगमरीति  
नहीं हेतु फल संभवे की या सुवाचक जोग ता २  
प्रनुक्रा विषयक हवस्तुत्प्रेक्षा लोग २३ वि  
हारी देख्यो अनदेखे कह्यो अग अग सबेदि  
या २ ये ठात सीत न में सक्तु चि वै ही चिते लजा  
२ २४ वारता इहां ये ठात की या सब हें तावे  
आं गीसा वाचक हे हेतु उत्प्रेक्षा आं फल उत्प्रेक्षा  
कौ संभाव न नहीं याते अनुक्रास्य वद जानी अं  
जहां की याचे आं गें वाचक अग वें गेत हा इही हो



इगी० जोरन हो० पुनः ॐ चतुस्ती चितवानि चिते  
भई० जो ट० प्रलसाय फिरि उज कन कौ नगन  
यानि इगन लगनी यां लाइ ८५ वारता रे  
सई जां नी ॐ ० यथा सिद्धा स्यदा ० या सिद्धा स्य  
दा हेत उन्ने द्या लक्षन जहा ० य हेत कौ हेत क  
रि संभावनाति हठोर सिद्ध ० या सिद्धा पदव है हेतु  
त्येष्टा ० जोर ८६ जथा मनौ चली जागन कहि  
न ताते राते पांय वार्ता नाथ काके चरन ० या  
पही लाल है बठोर ० जागन मै चले सौं नही क



भा. वि.  
२०

ठोर आंगन ब्रौ चलिबौ प्रहेतु है प्रचार नहे ताबों चरन की  
ललाई ब्रौ हेतु मान्यो हेत की संभावना करी ओक  
ठोर आंगन ब्रौ चलिबौ सिद्ध ही हे ठोर आंगन नैतो  
सदा फिर नो है याते सिद्धास्पद हेत उत्पेक्षा जानी  
अथ असिद्धास्पद हेत उत्पेक्षा चंद्रकंज तेव  
रुमन तुवं मुख समता चाय २७ वारता चंद्रमं ब्रौ  
रुमल ब्रौ परस्पर बैर है नाय कावे मुख की चाह जो  
है सो आस्पद है आस्पद नाम विषय ब्रौ सो असि  
द्ध है याते असिद्धास्पद हेत उत्पेक्षा जानी गे



अथ सिद्धास्यदा अथ सिद्धास्यद फल उत्पेक्षालघ  
नं जहां अप्रफल कौ प्रलब्ध रिमाने फल उत्पेक्षालघ  
विधवयाने दोहा कटिबुच धारिबे कौ मनो बांधी  
कंचनदांम नाती कटिबुच धारन करे हे यह सु  
तो सिद्ध हे कंचनदांम करि जांनी जई कटिबुच कौ  
तो धारन नही करे अप्रफल जो है बुच निबो धारनौ  
ता कौ प्रलब्ध करि संभावन कीयौ याते फल उत्पेक्षा  
जांनी जे बुच धारन विषय सो सिद्ध हे यातो सि  
द्धास्यदा जांनी जे अथ अथ सिद्धास्यदा परसम



भाषा चि  
२०

ठोर भाग न ब्रौ चलिबौ प्रहेतु है प्रचार न हे ताबों चर नदी  
ललाई ब्रौ हेतु मान्यो हेत ब्रौ संभावना करी प्रौ क  
ठोर भाग न ब्रौ चलिबौ सिद्ध ही हे कठोर भाग न मैतो  
सदा फिर नौ है या ते सिद्धास्पद हेत उत्पेक्ष्या जानी  
थै अथ प्रसिद्धास्पद हेत उत्पेक्ष्या चंद्रं जेत वै  
रुमन तु वं मुख समता चाय २७ वारता चंद्रमं ब्रौ  
द्रुमल ब्रौ परस्पर बैर है नाय का ब्रौ मुख ब्रौ चाह जो  
है सो आस्पद है आस्पद नाम विषय ब्रौ सो आसि  
इहे या ते प्रसिद्धास्पद हेत उत्पेक्ष्या जानी गे



अथ सिद्धास्यदा अथ सिद्धास्यद फल उत्पेक्षालय  
 नं जहां अप्रफल कौ प्रल करि माने फल उत्पेक्षालय  
 विधवयांने दोहा कटि कुच धारि वे कौ मनो बांधी  
 कंचनदांम बाती कटि कुच धारन करे हे यह सु  
 तो सिद्ध हे कंचनदांम करि जांनी जई कटि कुच कौ  
 तो धारन नही करे अप्रफल जो है कुच नि कौ धारनो  
 ता कौ प्रल करि संभावन की यो याते फल उत्पेक्षा  
 जांनी जे कुच धारन विषय सो सिद्ध हे या तो सि  
 द्धास्यदा जांनी जे अथ अथ सिद्धास्यदा परसम



भा० चि० ताकौं कमल जन जल से बात है बांम २२ याती के  
३३ मल नको नाइका के चरन नि की समता श्री प्राप्ती  
जो हे सो जल मैं तप करी जां नी गई सो चरन की  
समता प्राप्ती जल वास कौं फूल नही कमल तो  
दे जल में रहे हे चरन समता प्राप्ती अफूलता कौं  
फूल करि मां न्यो याते फूल उत्पेक्षा चरन समता  
प्राप्ती सो असि फूल हे ते असि दा पद जां नी  
जे अथ गं म्या त्वे ह्या विहारी कर उठा इष्टं घट  
करत उ सरगुज पट नोट सुख मों टै लूटी ललन



लाबिललनाकीलोड ८६ वार्ता ललनाकीलोड  
अबलीतल्लौंदेखिनायकमोनोसुखकीमोटेल  
शमोनोजोनोइत्यादिवाचननहैंहोइअर्थमें  
मोनोजाइनहंगम्योत्येस्माजोनोअथयासिद्ध  
स्यहेहेतुविहारी लग्गीअनलगीसीजुविद्यिक  
रीषरीकटिछीन क्रियोमनोयाहीकसारिबुचनि  
तेवअनियीन ८७ वार्ता बुचानितेवकीपीनता  
मुनेसिद्धहे कटिकीछीनताकसारिअहेतुताबौ  
हेतुकरिसंभावनाकीयों कटिछीनताकसारि



भा. वि.  
२३

कमती बौद्ध है हैं सो सिद्ध है या ते सिद्धात्प ह जा नी भे  
मनौ बढोर वही भे से पाठ हो इतों गंम्यो त्पे द्वा जा  
नी भे दोहा रजनी में नही राविर है दिवस नि सांभर  
हो न या ते मनौ याता पज सरधु वर पर गद की न  
याता श्री राम चंद्र नै प्रपनौ याता पज स प्रगद श्री  
योत हां हेतु ठहरावौ रावि चंद्र रे करानि दिन में नही  
रह नौ प्रहेतु बौं हेतु करि मां न्यो रावि चंद्र नही रह  
नौ या सिद्ध है अथ सिद्धात्पदा जगदुग निज सचि  
संग ले मानौ अथ यौ भांन याते मानौ जगत मे दे



यतनही जहां न २३ वार्ता लोग राति में नही देखे हे  
 भयो सरज आपनी हा चिन्ने साथ जगत चने चकी हा चि  
 ले गये हे यह हेत नही ता कौ हेत ठहरा यो सरज आ  
 धिन की जो तिले गये यह असि दास्य रहे याते अ  
 सि दास्य रहि यह पुनः विहारी ललन चलन सुनि  
 चुपर ही बोली आपन ईठ एख्योगा हि गां ठो गरी  
 मनो गलंगली डीठ २३ मुदित होत हे मुमुदिनी ज  
 लज जात सकुचाइ याते मां नौ चंद मुख राखत बंद  
 नदराइ २४ अथ सि दास्य इ प्रलउत्पेक्षा त छन



भा० चि० चारुत ससि निज जन भ्रमों बाढो प्रप्रयार विरहिनि  
 २३ तीय के इगनु मनु भाढत आस धार २४ वात  
 विरहिनि के इगते जल धार काढवो समुद्र के बाढवो  
 ता के फल संभावता की ओ समुद्र के बढवो तो स्वर्ग  
 सिद्ध है ये ते सिद्धास्प दाहे पुनः नीचे धिचै नित न  
 नित उबारै चिहु चलेत सति मुख तु बढा टि होम  
 नौ छी न नर न के हेत २६ वाती वैस हीं जानी भै  
 अथ आसिद्धास्प फूलो त्रिह्मा आवत उत्रावौ सु  
 विष है का जले जाइ बुरु भरै है अस्व मनु फेरन



मानि रह राइ ३७ वार्ता सरज उत्राइन हों नीता  
 भौ भूल छोडा वरन नौ नही अरुन भौ भूल ठहरावो  
 अस्वन्नो प्रेरवो आसि रहै याते आसि दास्य दजानी  
 जे दोहा कूलन श्रीमाला चै छिन छिन भरत सि  
 गार तोइ मनो वस भरन को चाहत नंद कुमार ३८  
 पुनः उंच होइ चवस श्री अंगसुर अंगसुर पाल  
 लटके हैं मानौं अबे जीतन को पाताल ३९ अथ  
 तुल्य योगिता लछन तुल्य योगिता तीन विधि लछ  
 न भरत सुजान होइ अवर्न रुवर्न को ये के धर्म समा



मां वि० त १०० वार्ता प्रवरन जो हे ता को बर्न नी य के गुरा  
२६ की या रूप धर्म ये ब्रवरनै त हांतु ल्य जो गिता जया  
को कं कुं भन हिल हत है सो भा उर ज उतंग वे न नै नवा  
वे भरे प्रग ठत जो वन अंग १ वार्ता प्रस्तुत कुं च  
न नी य के प्रसंग पाइ प्रस्तुत को कं कुं भ सो मान प्र  
बनो यह स्त्र धर्म कह्यो यह गं थांतर मै है प्रस्तुत  
यो वन के प्रसंग पाइ प्रस्तुत हो हे वै न नै न को वा क पनो  
य व धर्म कह्यो पुन बनी कमल की स्त्री नी वदन स  
को चेत जाय वार्ता ११ प्रस्तुत चंद्रो दय काल मे



रुमलखोरनीचर्ननीय प्रकासमेडरतहे ओखोरि  
नीताकोवदनकोकीयाहूपरेबुको॥प्रन्त्यादिखाये  
॥आंगैगुनको॥प्रन्त्यादिखाये॥हे होहा तुव॥प्रगकी  
सुक्रमारतालाषिभाषतमातिमार चंपकभुंदसुमा  
लतीलगतगुलाबबडोर ३ वार्ता यहनाइबाकी  
सुक्रमारताप्रस्तुत ॥आबर्नचंपक॥आदिताको॥  
होरताहूपगुनताको॥प्रन्त्यादिखाये ॥गद्यइसरी  
गुनसोजहउत्तंडहसौसमकरिबहे॥अनूप इइध  
नइजमलोबपातिवहन॥ओरयहभूप ३ वार्ता



भा. वि.

२५

इहो राजा वर्ननीय सो गुन बरि उच्छ्रय इन्द्रादिति न  
ब्रौं सम भरि ब्रह्मो नीसरी लछुन सत्रु मित्र पेवित्र  
सम होइ सुञ्जोर जहार गुन निधि नीचे हत नूति प  
ब्रौं हरि ब्रौं हार ४ वार्ता वित्र ब्रौं अर्थ व्यवहार  
अथ दीपक दीपक वर्ननी वर्ननी ब्रौं ऐक्य धर्म समान  
गिरि गृह गद गुन वंत ब्रौं होय उच्छ्रिता मोन ५ वा  
र्ता गुन वंत वर्ननीय गिरि प्रादि प्रा वर्ननी ब्रौं उ  
चैता धर्म ऐक्य जथा गज मद्द सो नीयत जत सो  
सोभा लहत वनाय गेयांते उपमान स उपमेय



कोइकपदलगतसुहाइ ताकोंदीपककहतहेसक  
 लसुकविस्समुदाइ है जया छनकरिदांमिनेल  
 सतहेनीलांवरकरिवाल गजमरसौनपतेजसौ  
 सोभालहतविस्साल ७ अथअचतिदीपक आ  
 चतिदीपकतीनिविधिअचतिपदकोंहोइ पुन  
 हेअचतिअरथप्रोइजीनहीअसोइ ८ पदअ  
 रथप्रोइहंनिप्रोअचतितीजीलेखि छनवरस  
 तहेरीसखीनिसवरसतहंदेखि ९ वाताअच  
 तकोंअथप्रयदनौ निसकोंवरसनौअंधकार



भा० वि० ॥ हो नो यह पद बौं प्राचल रहे पुनः हलै वृक्ष न बंदव  
२६ ॥ केकेत न विगसे प्राय वाता विगासि वौ फल बौये  
के० प्रथी है यह ग्रथा विनिहे मया मत्र मयो हे भो  
॥ ग्रहा चातक मत्त सराड् पू० वाता इहां सव्द प्रथ  
एव है अथ प्रतिपत्त पमा प्रतिपत्त पम वाक्पद्यो  
उपमे० ग्रह उपमान् तिन के धर्म सुब्रह्म है जु दे जु  
देव जान ११ जथा सोहत भानु ग्रता पद्म रिह स  
न चां पद्म रिह विषधर सां वन से ई० जेत जी०  
बैन नर १२ वाता भानु उपमान् सूर उपमेय



प्रतापउपमान चापउपमेय त्रसैसोभापदको अर्थ  
 येकैहे सोचतसोभाकौ जुदा जुदापदकारिब ह्यो  
 जहांउपमानउपमेयको ऐकसाधारनधर्मजुदा  
 जुदापदवर्तैहोइतहांप्रतिवस्तूपमांजानीये ३३  
 थइछांत जहांविंवप्रतिविंवसोइछवाक्यइछां  
 त भ्रांतिवांनससिहीनयेनह्येकीरतिवंत ३३ वा  
 ती जहांउपमानवाक्यउपमेयको नुहोनुहो  
 धर्महोय ओविंवप्रतिविंवभावकरिदिखायैहो  
 इ विंवप्रतिविंवको अर्थ ऐकवातकीछायाय



भा. वि.  
३७

कवातमै होय मिलती बात होय तहो इयोंत भले  
भार कांति श्रीरति बौ विंव प्रति विंव विभाव पुन  
विहारी उसहुदुराज प्रजानि नौ क्यो न बहे दुखहु  
६ आधि कपधेरो जग भरत मिलिमा बसरावि  
चंद १४ सुगम अथ निदसन्न जहो उपमेय सुवा  
क्यमे उपमां वाक्य सुजोग जो सो करि सुनिदसना  
रहत सवै बाले लोग १५ वाती जहो उपमेय वा  
कार्य उपमा नवा कार्य नौ जे सो सबद करि स  
जोग होयार्थ करी जे कता करे तहो निदसना प



रनबौसमहसोवाक्यार्थ पदबौअर्थसोपदार्थ  
जया दत्तासम्योसुअंनविनपूरनचंदनभास जो  
उदारमींठेवचनसुबरनमोहिसुवात १६ जार्ता  
दत्ताबौसोम्यपनौसोउपमेय वाक्यार्थ ओपूरन  
चंदकीअंनलंकतासोउपमानवाक्यार्थताबौ  
जोसोठहरायो दत्ताहोयकहोरवचनकहेरन  
चंदलंकतेरहतहोइ तोहोअसमानहै ओ  
जहांऐकपदमेऐकपदबौआरोपहोयसोरूपन  
जयामुखचंदइहांमुखपदार्थबौआरोपबौअं



भा० चि०) तासो रूप क जो मीठे वचन हे सो सुवर्न मे सु गंधरो  
३२ इतो ऐ क स मे हे अथ इसरो निदर्शन एवे जह उप  
मे य मे उपमां धर्म सुभा नि उपमां मे उपमे य  
धर्म धरै सुवसां न १७ जथा खे जन की साधि च  
पलता गे हे ति हो रे नैन जल ही ते रे अस्व की पो न  
लई हे अैन १८ वाता उपमे य नैन मे खे जन उप  
मां नति न की च पलता धर्म राख्यो अस्व उपमे य  
की धर्म जल ही पो न उपमां न मे राख्यो मति रो मे  
जब कर गहन न मान सर देत अरि न को भीति



भावसिंघमेपाइहो।सबअरजुनकीरीति १८ वाता  
इहांभावसिंघउपमेय अरजुनउपमानकोधर्म  
राख्यो अथतीसरी जहांअसतसतकोकोरेकी  
याहीतैंउपदेस तीजीब्रह्मतानिदर्सनाजेकविमा  
हिसुंदर १९ जथा रविमोनिमित्तमबोछाईज  
अतविरोधीनांस जितवतफूलानिजबद्धिसासिक  
रहितबुमुदविलास २० वाता जहांअसतकीया  
करिअनिष्टअरथकोसमजायो अथवासत  
मलेकरमकोसमजायोतहांतीसरीनिदर्सना



भा. वि.  
२६

रवि सो तमनि सि. पंधकार ना स की या हे सो जगत  
विरोधी कौ ना स की या स मु जायो चंद मोने अप  
नी विधि सों हित कौ भलौ करनौ यह जतायो पूरा  
हुमे अप स दार्थ नि बंदना उन्नयार्थ मे स दार्थ नि  
बंदना पुनः स दार्थ नि बंदना मधु भुरह महरि  
भौत जौ करि कै पाम सु पीति बगद करत है जग  
त मे यही बुटिल की रीति २३ बार्ता श्रीति करि  
त्याग जौ हो सो बुटिल की रीति बौ बगद त है पुनः  
संदर्शन बंदना हरि सुवल बिलो बन स यो सु



बसों न रात विनोद मगद करत भुबल यन नहों हेच  
 दोद मोद २२ अथ अपतरेक अपतरेक जु उपमान  
 ते उपमे अथ श्रीदेव मुखहे प्रनुज सौ सखी मोठी  
 बात बिलेख २३ आता नहां उपमान ते उपमे य  
 धिनी होइ ते उपमे यते उपमान अथ श्रीहोय  
 सो अपतरेक उपमे य मुखमै मीठी बात बिलेख  
 पुनः बिलेख वीयती य सों हसि नैं क ह्यो ल बोदि  
 ठौ नाहीं न चंद मुखी मुख चंद नैं भली चंद स्व म  
 न. २४ रहे वष उह न मेहु जो बढा बत भाम लो



भा. वि.  
३०

बनकौ सुख देत है आनन कौ हसि धाम २५ वार्ता  
सुख उपमेय चंद्रमा उपमां न तो मे कह्य बिसेल नही  
अथ सहो कि सो सहो निद्रो संग ही बरनत रस स  
रसाय की रति अरि कुल साय ही सागर यह चीजा  
य २६ वार्ता अरि कुल ओ र की रति साय ही न  
हो ओ ई राज कौ कहत है सिर सात को अर्थ अ  
हालातों विहारी छुटत मुठी संग ही छुटी लोक  
जाज कुल चाल लगे दुहु निद्र बजार ही चल चित  
नेन गुलाल २७ सुगम अथ बिनो निल छन



हैं विनोति है भांति की प्रस्तुत न कर विनछीन जो सो भा  
 आछी ल है प्रस्तुत न कर य कर हो न २८ जया पि  
 यमन रंजन इग अली प्रेजना विन सो भैं न बालि  
 सें वगुन सरसात तरं चरु बाई है न २९ धाती प्रस्तु  
 त कर हो प्रे व र्णा नी य सो ते न प्र प्रेजन न हत है ओ न  
 आरु बाई विना प्रछी लाग है प्रति रामे विषय न  
 ते निर्वेद वर ध्या न जोग वरत न न निम्ल जा नियो  
 प्रे व विन प्रभु पद पं प्रे ज प्रेम ३० पुनः देखत दीप  
 नि दीप की देत जान अरु हेह राजत रे व पतं ज मे वि



भा० वि० नाक पद्यों ने ह ३१ अथ समासोक्ति समासोक्ति  
 ३१ अथ तुने कुरे जु अस्तु तमां ज भुमदिन हं प्रलत भई  
 दधि बलानि धां सां ज ३२ याती न हो बोई गस्तु  
 तबो वने न बरे तो मे अथ अस्तु त कुरे सो समासोक्ति  
 इहा सां ज बो वान न बरे हे तहां भुमुदनी स्त्री लिंग  
 हे अथ अस्तु नाय भाना इ  
 कभी जाने जाते हे विहारी नही पराग नही मधु  
 र मधु नही नही विभास इह बाल अती कली ही  
 लो बध्यों अं जो न हो बाल ३३ याती नो भौर



५. हो ते भरे तो नाइ भाना इ भु जाने जात है अथपारि  
भर है पारिभरुं ये सेली जे जहा बिसे खन होइ हि  
म भरवदनी नाय भाना पाहरति है सोइ ३४ आता  
जो बिसे खन तावे से खना जा नौं भिं न की जो जे सो  
बिसे ख्य हि म भर की भिर नै हि म भर चंड नां सो मुख  
सो ताप हरै है सो बिसे खन है सो भय अथपारि  
जे है जो सो तल होइ है सो ताप हरै है विहारी बाल  
बे लिं सुखी मुख द्य हरु सीरुष धाम भरि उह  
ही की जो जे सुरस सो बिछन त्याग ३५ आता



भा० वि० छनस्योमश्रीकलमनोविसेछनहेछनस्योमहोइसो  
३३ सींचतेहे अथपरिकरांभुर साभिजायविसेछन  
हपरिकरअंभुरनाम मधेइयोयनेछहेनेछन  
मानतिवाम ३६ वार्ता नहींमानतयाजातपुख  
वैरहेआमसाभिजायविसेसपदहेआमदुखनौ  
भीअहतहेबिहारी जसअपजसदछननही  
देखतसाबजगात कहराचरोलालचकरेचफला  
नेनयाहिजात ३७ वार्ता नेनपदविसेसहेया  
कोअर्थनेननामनीतिनौहे नीतिजिनमेनही



सो जस प्रयजस को देवेने अथ शेष शेष  
 लंछत अथ मैहु जहा सब दमे होत होइन पूरन  
 नेह विन मुख दुति दीप उदोत ३८ वार्ता अने  
 क अथ रे रूप द मै होइ रे क वरन सो लागे प्रेरव  
 नैवर्न सो लागे त ह्येस नेह नाम ते लब्धो  
 प्रीति को उदोत मुख को प्रकास ओ दीप को प्रका  
 स मुख वर्न दीप अच वर्न ता को अथ शेष वर्न वर्न  
 जथा पीन पयो धर अंग छवि नग धारे अ  
 भिराम हरे सुने सो मान को बंदा वन हित स्याम



भा. चि. ३६ नाना ययो धर बुच ययो धर मे ध नग हो  
३३ ए. आदि नग पर्वत. अभिरां म सुंदर हो उ. ब्रह्मा  
त्य सुब्रह्मा अक्षरा. अब न पलन सो हे हित जा  
को ओरा धा जी को चं हाव ना हित हे स्या माना  
मश्री. स्र स्र को बिं बा स्या मा को मा भार को ल  
धर्य हो हे जे सैं बाला को बाल ब्रह्म त हे स्या मा  
सो लाव स्र को इ ली को ब्रह्म त हे इ हा सो उ. वना  
वर्न हे अथ. अथ सुत को जयो. अति. अथ  
लाहे मिली मुख न मे रहत सदा य तिनक



५ मलनिबी हारत छवि तेरे तेन सुभाय ४० वार्ता  
 हिली मुखना मवां नबौ ॥ जौ भौं रबौ वननाम  
 जलनबौ ॥ ओ उद्यां नबौ ॥ इहवां न ॥ ओ भौं रदो ॥ ऊ  
 बौ वन हेता बौ सलेष ॥ अथ ॥ अथ स्तुत अथ संस  
 ॥ अलंकार है भात बौ ॥ अथ स्तुति परसं स रेड  
 वान अस्तुत बिना इजौ अस्तुत हे स ४१ वार्ता  
 ये कतौ जहा ॥ अथ स्तुत ही वारने हो ॥ ५ ॥ गोरयेन  
 ही लागे इलरी ॥ अथ ॥ ओ रये कहे ॥ ओ रये लागे  
 सो पां चतरह को हे ॥ अथ करताने नै कठिन जान



भा० च० निवेन हीं कहैं जया धानि यह चर चा ग्या न श्री  
 ३४ सकल सबै सुख देत बाती इहो द्वे बल न ज्ञान चर  
 चा पारलगे है ओर पै न लगे दुः विषय सब  
 है कंठ हर आप धरो यह हेत ४२ बाती सि  
 व नै विष दुष्ट ता को आराधन बिघो या हो  
 नै आप गे गा जल सी तल ता को धारो राजा  
 नै को ई दुष्ट ता को राख्यो है ता द्वे दवा इवे देली  
 जे को ई मुनी जन राख्यो है या को अन्या त्रिभी  
 कहते है विहारी बट पाये सब को नै सपर



पेरईसंग सुखीपेरवापहमिपेरैवैतुहीविहंग  
४३ वाता इहांपेरईकवतरताहीपरलेगे दोहा  
कांधेब्रेसरवांधिब्रे जोभीनेमगराज झंझर  
सोभरिहेबहाभरिकुलबंपनगाज ४४ वाता  
इहांराजानेकोइनीबंभोवडाभोमदीयाहे तामे  
कहंचातुरभीडाकि प्रथयप्रस्तुताभुर प्रस्तुतभं  
पुरहेक्रीयोप्रस्तुतमेपरताप्र कहंगयोप्रलि  
बेबडेछोडितुभोमलजाप ४५ वाता प्रधान  
जोप्रस्तुतताकोवृजावनहरोइतरैप्रस्तुतबने



भा० चि० व० वर्ननीयमेव वर्ननीयप्ररे सखीब्रहेहेजोभोरमा  
 ३५ लतीबौछांडबैबैवडंगरेहे इसरोषधानवस्तु  
 ननायकाकीसखीबौनायब्रजातिउपदेसभीनि  
 क्ररेहे जेसीनायकाबौछांडबैबाबैपासक्योगरे  
 पुनः मतिराम सुबरनबासुबरनसुनसरसह  
 नसुक्रमार जेमेचयब्रबौतजेतोहेभौलगमार  
 ४६ अथपयीयोनि परजायोनिप्रकारदेव  
 पुरचनानेवात मितकरिकारजसाधोयेजोव  
 पुचितेसुहात ४७ वार्ताजोवातसखीब्रहने



होइ तासो विलेख चमत्कारी तरह बांन यझे ब्रह्म  
सो अथम चतुरव है जिहलु बगैरे विन गुन डारी  
नाल तुम हो उचै देइ हो जात न हो चनताले ४  
८ वार्ता वंडिताने यह ब्रह्म हो जे से आये वैं  
बी होर पधारी गे ब्रह्म ही जथा मति राम जावे  
लोचन करु न है कुवल य ब्रह्म मूल प्रकाश सो भा  
उभो पल्लव है ही अरत नित नास ४२ वार्ता  
भग बांन ब्रह्म नौ तौ ता को ऐ ब्रह्म बना कर ब्रह्म हो  
चंद्रमां सूरज भग बांन ब्रह्म है जथा विहाति



भा०/चि०  
३६

लाखिलौ ते लोयन न न के बीये न होइ न आन को  
नगरी वन चाजि बौ ब्रन हटोरति राज ५० वाती  
सखी की उन्नि नाय का सो जो होइ तो को न नाइ  
भा पास जाउगे करोगे सो ऐ कलालित करि कछो  
भौ नगरी व कहोगली ता को निवाजोगे कहा को  
मनुष्य कहै प्रसन्न कमरे यहर चनाते अथछ  
लखो काज चिहारी लखि कालै वे के मिसन ल  
गर मोहि गआइ गयो अथां न न अंगु री  
छानी छे लखु वाइ ५१ वाती लखि कालै वे के



मिसरु रिसरु साधो ध्याती धुबानो अथवा  
जस्तुति निंदा अस्तुति ते जहांस्तुति निंदाओं  
ज्ञान व्याजस्तुति ताओं कहें जे अविमोहसुजा  
न ५२ वार्ता जहांस्तुति ते निंदाओं ज्ञान होइ  
निंदा तेस्तुति भौ ज्ञान होइ जथा निंदा मिस  
स्तुति जानी जीत सुनर कहो यह अचरज  
हो मोहि चरग चढाए पातित लै गंग कहवाक  
हो तोहि ५३ वार्ता इहां गंगा जी की निंदा मि  
सिस्तुति पुन बिहारी कहाले ते इग करे परे



भा. वि.  
३७

लालवेहाल कह मुहली कह पीत पद ब्रह्म मुहुर  
वनमाल ५४ वाता तेरे इग सो असे कहाहे  
जो तेने लाडिले की ऐहे जिन लालकों विहाल  
करि डारेहे इहने अनि की निदा सो ने अन की सु  
ति अथ सुति में निंदा तो य तो विन पीय का  
जको करिहे तन मन लाय भा जो दोष हरी वडा  
अइसे वद अहाइ ५५ वाता अने सै भोग  
इ विना की उत्र इती की सुति निंदा पुम सु  
ति ते सुति धनि रसना अथ ने गुन न रहत स



दा अतिचेन बावे कटि मे रहत है बास श्री ऐदनेन  
५६ वाती इहां रसन श्री सुति सो कटि की सुति  
अथ व्याज निंदाल छन व्याज निंदालि दाहिने  
निंदालि करत होइ सदा छी न कीने न सो चंदम  
रहे सो ३ ५७ वाती जहरे कनि दा सो इमरे की  
निंदालि करे तहां व्याज निंदाल विरहि नीके बच  
नहें इहां विद्याता की निंदाल सो चंद की निंदाल  
मति रामें प्रगट कटि लता जो करे हमये स्पाम  
सरोर मध्यपजोग विष उगलि को इहाति हारो



ਜਾਗਾ ਚਿੰ ੩੮  
੩੮

ਦੋਸ ੫੮ ਘਾਤੀ ਮਧੁਪਕੀ ਨਿੰਦਾ ਤੇ ਭੀ ਭਾਸਕੀ ਨਿੰਦਾ  
ਹਾ ਪੁਨ ਭੀ ਕਲਿ ਕਲਾਵ ਭੀ ਰਚੇ ਵਿਰਾਹਿ ਨਿਭੀ  
ਭਰਸਾਲ ਆਧਾਨ ਹੈ ਤੈਂ ਸੀ ਸੇਧੈ ਨਿਰੰਦੇ ਮਹਾਰਸਾਲ  
੫੮ ਘਾਤੀ ਇਹਾਂ ਭੀ ਨਿੰਦਾ ਸੀ ਭੀ ਕਲਿ ਕੀ  
ਨਿੰਦਾ ਭਯਾ ਭਾਏ ਪ ਭਯ ਭਯ ਭਾਰ ਭਾਏ ਪਹੇ  
ਭਯ ਮਾਨਿ ਭੇਦ ਭਾਸ ਪਹਲੈ ਕਹੀ ਭੇਭ ਭਾਪ ਕ  
ਭੁਭੇਰਿ ਭੇਰਿ ਭੇਤਾਸ ਹੈ ਭਾਤੀ ਜਹਾਂ ਨਿਭੇ ਭੀ  
ਭਾਭਾਸ ਹੋਤ ਸੋ ਭਯ ਮ ਭਾਏ ਪ ਜੋ ਭੀ ਹੈ  
ਭਾਭੇ ਇਤ ਭਨੀ ਭਯੋ ਜਾ ਭੀ ਵਿਸੇਖ ਭਾਤ ਨਿਭੇ

ਜਾਗਾ ਚਿੰ ੩੮  
੩੮



६ श्री वेदोक्त है तमै न हो प्ररनो निज से सो इसो  
 जथा सीता विरनि देर सतु ॥ याथ वतीय मुख  
 आइ जाउई मो जनम दे चले दे सतु मजाइ ई  
 १ याती चंडमावौ दरस बाह प हलैं केरि विचा  
 रैं ब्रह्म जी याको मुख है ती को दरसन गछत  
 पाति को की उक्ति तुम पर दे सजाइ यह विधि  
 कर्तव्य बात को उव दे ससो विधि तुम जाहि दे  
 सजात हो ताही दे ससो हमारे जन्म विधाता  
 देइ जन्म की शार्थ नाति ॥ यापनो मरिबो जना



भा.चि. नायो तासो माति जाहु इह निषे ६ पुन माति राने नि  
३६ हो न कहत तुम जा नीये। लाल बाल की बात ग्या  
सु उड जान गिरत है हो न चहत उत पात ई२ वा  
ती कहति है प्रिर ब्रह्म है हो न ही ब्रह्म हो विहारी  
मोहि दी जी ग्ये मो बुज्यो प्रने कपति तनि दीये  
जो बाधे ई तो छतौ बाधो प्रयने गुन न ई३ वार्ता  
पहले ज्ञान मो ज्यो फेर फूरो जो मो दन न हो दिउ  
तो न देव जो तुम बाधे ई तो छह तो प्रयने गुन  
न में बाधो विधि में निषे ६ इ यो है पुन विहारी



<sup>लि</sup>  
 सदन सदन के हरन की सदन छुटे हरि राय रुचेति ते  
 विहरन प्रीति बिता विहरत इत आय ई४ वार्ता विह  
 न प्रीति इह विधि सो प्रीति जाहु यह वक्त  
 जो धव्य के प्रभाव ते निब्रै हे पुनः मोह सो बात न  
 लगे लगी भी भजिह नाय सोई ले उर लाई गे लाल  
 लागीयत पाय ई५ गय विरोधा भास भासे जहां  
 विरोध सो बही विरोधा भास सुधिं प्रां ने सुधि जा  
 ति हे वह मुख चंद प्रभास ई६ वार्ता जहां विरोध  
 को जा भास होइ विचार ते न होइ तहां विरोधा भास



80



चरन प्रहृत लेखे मे ॥ अज देई वार्ता जाव ब्रै न  
लाली को करन हे सो बिना जो बकरी नलात भयो  
जासों उपजे सो करन जो उपजे सो करन स्वर्न  
भारत भूषन करन विहारी विनती राने विपरी  
त को करी परसि पीय पाइ हासि अत बोले हीरी  
यो उपर ही यो बतनाइ ७० वार्ता उपर बताने  
को बोलना करन हे सो बिना बोले बतनायो अथ  
दसरी विभावना हेत अथ बत जहां करन प्रान हो  
इ कुलमान कर गहि मदन सब जग जो यो जो ७१



भा. वि. चि.

४१

वाती जीतये मे हेतु ब्रह्म ज्येष्ठारन बा न हे ना मे नी धन  
ता ब्रह्म रतान ही तो भी जगत के जीतन न ब्राज भ  
यो विहारी तो जय वर सौति न स जे भूषन वल्लभ  
सरीर सबै मर गजे मुह बरी उही मर गजे चीर ७  
१ वाती सौति न के मुख में लो बना करन मर गजे  
बीर न ही अति सुंदर वस्त्र सौति न के पत्नी न के  
हे नु हे सावन्त्र में बाहु लपने उज्जल तान ही  
तो भी कर ज कीयो अयती सरी विभक्त बना प्रात  
बंध बंधे होत ही कर ज प्रान मानि निखरि न सु



निसंगतिन उनेन रासकी आन ७३ इहां सलब मे भुति  
कहे वेद की जकी संगति होय ता को राग देखना न हो  
जे भुति संगति प्रतिबंध कहे तो तो भी राग समये  
राग स्लेख पुन चालि वालि मोहन देखी ऐ बिह  
द्वारे गात नेन वारि सो चतत उ होये ता पसर सात  
७४ वृत्त वारि सी चि बोता दि को संबंध कहे तो भी  
संभवे जय चोथी विभावना जवे प्रद्वारे न वात  
ते करानु प्रगटत हो प्र को बिल की बोनी जवे वा  
लत सुन्यो दपोत चार्ता को बिल की बोनी प्रद्वारे न



भाषाचि  
४३

को बिलहे कवूतर अकारनहे साते काज भयो व  
पोत असे सो नाय का को ब्रंठ चो बिल श्री सो बांनि  
पुन माति रांम हस्त वाल ब्रवदन तेय हट्ट विच  
दत्त प्रतूल रुली चंप ब्रवेलिते प्रारत चमेली फूल  
७५ विहारी पुन इह कांटे मो पां इला धिली नी मर  
त जिवाइ प्रीति जना वत भीत सो मीत जु का हो  
आइ ७६ वार्ता कांटे जिवाय वेढो अकारन ही ताते  
जीवौ हो अरज भयो अथ पांचमी विभावना  
काह अकारन ते जहां अरज हो इविह रु मोहि प्ररत



संतापयहसखीसीतक्रासुख ७७ वार्ता कहंविह  
रुकारनतेकारजउपजे सीतभरतापको विरुहहे  
तासोतापभयो **विहारी** कीयो जुचिबुद्धउठाइके  
कंपतक्राभरतार टेहईटेह प्रिरेटेह तिलकलला  
र ७८ वार्ता टेह तिलक जोहै सोलाजको कारन  
हे गरवको कारन नही तासो गर्व नार्ज नयो ७९  
यस्यस्यमी पुनि कछु कारन ते जहां उपजे कारन ह  
प नैनमी नते देखी असे सरतावहे ८०  
वार्ता नदीसौमीन उपजे हे इहमीन कारज तासो



भावचि ७ नदी द्वार नउपजीहे नेत्रमीं नल्लसो नदी प्रासक्षी  
 ४३ जानीअ पुनः भातिराम भयोसिधुतेविधुसुब्र  
 विवरनतविनाविचार उफज्योतोमुखचंद्र  
 तेरूपपयोधिप्रवार २० अथाविसेसोत्रि वि  
 सेसोत्रिजहंहेततेद्वारनउपजेनाहि नेह  
 धरतहीयमेंनहीकांमदीपाचितमाहि २१ वा  
 ती हेतुठहरेद्वारजनउपजे जैसेदीपजरहेन  
 हनहीधरेनेहमेंसलेख नेहतेलग्जोप्रीति वि  
 हारी नेह ननननिहोंब्रध उपजीबुरीबलाड



नीरभरे नित पीयत है तउ नप्या सवुआइ २२  
 वाती नैन नीरभरे पुख्खा सवुआइ वेनौ बार  
 नहै सो प्यास नांगई अथ प्रसंभव कहै प्रसं  
 भव होत जहां विन संभाव नकाज गिरधर  
 हे गोपसुत को जानै इह आज २३ वाती बार  
 जकी सिद्धि होइ विना संभावना विना निंदा करि  
 कहत हौं गोपको बालक गिरधरै गोइह प्रसं  
 भावना पुनः अछ वंछति न ठोरते नहीं लखे गु  
 न आन कृविजाव सिद्धि है ब्रह्मा जे सो सुंदर को



भावाचि ७  
४४

न ८४ अथ अस्मत्ति नीनि अस्मत्ति काज अ  
कारन न्यारेहांम ओर हो रही की जी अ ओर  
हो र को काम ८५ ओर काज आरंभी अ ओर की  
अंदोर को दल मधुमांती मई जूं मति अ वामोर  
ई वाती कारन मस्ती के मधुपांन को बिल मे  
कारज जूं मना आंच मे मति राम राधा के दुग  
बेल मे मूं दे नंद कुमोर करन लगी दुग के मयौ म  
ई छेद उर धार ८७ अथ दूसरी तेरे आरंभी अ  
गना तिल कलगा इय रों इ तीसरी मोह मिथायौ



नाहिहरि मोहलगायो आइ २८ वार्ता हे राज  
नेतेरे रते नेरे सचुन की नारी तिल पां इमे लग  
पती हे तिल कृ भाल मे लगायो चाही जे सो पां  
इन मे लगारे हे पुन बिहारी पलन पी कृ जे जम  
इ गन धरे महावर भाल आनु मिले जु भली कृ  
री भले बने हों लाल २८ ती जी गर्थ मोह मिद  
इवौ सुबत भयो आइ के मोह लगायो पाते तीस  
री अखं गति पुनः साति रां मे उरित भयो हे ज  
लद नू जग को जीवन दें न नेरो जीवन लेत क्यो



भा० वि०

४५

क्रेन्सुवैरकहेन ६० अथविधमअलंकार विष  
मअलंक्रततो निविधिअनलाइककोलेग कर  
नकोरगअौरहेछाहजअौररंग ६१ औरमलेउ  
छमअरहातबुराफूलअाइ कहवोमलतननी  
यवोबहोक्रामकीलाइ ६२ वार्ता नायकक्रि  
मलतनअौरासाग्नित्राइवनहीयातेमथमा  
इसरी छडगलताअतिस्यामतेउपजीवोरति  
सेत तीसरी सखीलोअैअनसारतेअधिकताप  
ननहेन ६३ वार्ता छडगलताकारनस्यामकीर



धन

लिङ्गाजसेत पुनः कीर्ति श्री गुरी स्याम इह प्रगटति है  
देख प्रगटे उज्जल नीर ते प्रहृन्न नमस्त प्रबोर व  
जो लरी प्रथम मले प्रबने रो रे गतौ दो उद्यम करे  
नासो नाझा रा प्रलामिले तहां तीसरी प्रार ल गायो  
तोता पड़े नास दो तासो इनी भई पुनः बिहारी  
लोने मुख ही ठिन लगे यो कहि दी नो ईठ इनी हो  
लाग न लगी दी प्रे दिठों ता दीठ ६५ प्रथम  
मा अलंकार समती न विधि जथा जोग हो सं  
य कारज में जहां पाई प्रे कारज ही भौ प्रंग ६६



भा. वि.  
४६

अमविनकाजसिद्धजहउदमकरतेहोइ हारका  
रतीयहीयकीऐचयनेलाइकजोइ ६७ जाती  
हारओतीयकीउरहोनौअनूपहेसमानहेताकी  
संबेस्वरनतहे मातिराम लालकरतम्भुहारहे  
तनलयातिवाहिवोर ओसेउरजबडोरतौन्या  
यनिउरजुबडोर ६८ इसरी नीचसंगअचर  
जबहीनछमीजलजाआहि जसहीकोउछ  
मकीयोनीकेयायोताहि ६९ जातीकारनजल  
ताकीगुनलक्ष्मीकारमेयायोयातेइसरीसम



जो जहां जसको अमरीयो तहां बिन अमज सलाम  
भयो पुनः मीठी तेरी बात मुहि लागति प्रतिही  
आल बदन सुधा धरत प्रगट होति नृद्वेष्टा हसिला  
लं २०० ततोय मनहि छुटावन ब्रौ ब्रौ यो छुटौ  
मान लाये लाल हिलि मिलि होउ सुज मे विहर  
ते वयो बाल १ गद्य चित्र इह्या प्रल विवरीत  
द्वी द्वी जे जहां विचित्र नवत उच्चत लहत भोज  
हे पुरष पवित्र २ काती नमि तहो नेते उच्चत ल  
हंतो पुनः त्याग करत हं धनी को धन पावन बंधा



भा. वि. ज. मोन न रहत को न जहे मोन न हो तुहि लाज ३ वात

४७

धनी भगवान मोन बडाई न रहत हे अथ अंधि न  
अंधि अंधि न अंधि यते सूरु म होइ अंधार उ  
उगरी की सुदरी हती सो भुज नरति विहार ४ अ  
धि न आई अंधार ते सब अंधे य की होइ जो अंधा  
र अंधे यते अंधि न अंधि न हैं सो ५ वात रह  
ने वाला अंधे य जो मे रहै सो अंधार जय सात  
दीपन चखे ड में की रति न हीं समानि सब दीपि धु  
के तौ जहां तु व गुन बरने जानि देवानी सात दी



वः आधार कोरति आधेयकी आधिआई लक्ष्मिं  
 आधेय गुन आधारकी आधिआई वडे आधारते  
 आधेयते आधारकी आधिआई नहां आधिआलं  
 अरजानीं जै सै तरवारि तेम्यो न बडो म्यो न ते  
 तरवारि वडी पुनः आमन मे सवही वसे न हीये  
 येने हसमात वार्ता मन आधारते नेह आधेयकी  
 आधिआई जया वसे बिस्वजामे सुहरि वजकी बु  
 जसुहात १ वार्ता हरि आधेयते वजकी जया  
 धारकी आधिआई पुनः आवात लाबि पी यदूर



मात्रे चि० ते चाटि वैमहून उतंग अंगन अंगन समाति है अंग  
४८ न उदधि उमंग ८ बाती सुगम अथ अल्प  
अल्प अल्प आधेय ते स हस्त होत अधार उ  
गरी की मुदरी इती सो भुज कराते विहार ८ बाती  
मुदरी आधेय स हस्त मताते भुजा आधार की  
रुसता स हस्त पुनः कटि इते प्रतिष्ठी न है स  
धिमना लकी तार तेरे लुच के बी च में नहीं पाव  
त से चार १० बाती मना लकी तार आधेय स  
हस्त ते लो लुच के बी च आधेय स की संकी र



नो सुदुस्मेहे पुनः गासयाससवगांमके प्रतिहिलप्र  
 नसुदेस सससावचक नाल हैतामेतनक प्रवेस ११  
 वाता वन गाधारासससावचक गाधेयसोगवेस  
 नहोंकरसुदरे अथ अंत्योन्य जहां परस्पर उदरे १  
 अंत्योन्यालंकार सासिसौ निसिनी कीलगे निसिही  
 सौललितार १२ वाता सासिसौ निसिनी कीलगे निसि  
 सिसौ ससिनी की जथा मतिराम तरावी साधिलाल  
 करि निज उरै संचन माल तेरा वै निज लाल करि बंड  
 माल को लाल १३ वाता लाल नै लाल मद्रो वनमा



भा. वि.  
४६

लाकरी ललनमै लालकों बंठमातको लालनीये  
इहां पाए पद पकार ॥ वधविसे पालें नर तीन बंभा  
एविसे घड़े ॥ बना धार ॥ आछेय बडी वस्तु नी सिद्ध  
नौ कछ ॥ आरंभ जु देय १४ वस्तु रे ककों नी जो नै पर  
नन ठाम ॥ अने न नम ऊपर के चन लता सुमन लख  
है रे १५ वार्ता नम आ धार न ही त हो के चन ल  
तावी जुरी सुमन चंद्रमा मति राम चलो लाल बा  
की रसाल यो कह ही न हो जाइ ही यो रे है सुधिरा वरी  
ही यो रे जाये हिरा ३ १६ वार्ता २६ नौ ॥ अने आधा



रम्भाधेयकहोय मेरु इतरो जहो प्रसिद्धि प्राधारते वि  
 नः जो रम्भाधारे मेः प्राधेयवर्नन होइ पुनः जहो प्र  
 सिद्धः प्राधार विनः जो रहे होइ सुवास रावि नो किर  
 नें हो पायितन मन्त्रो करत विनांस १७ वाती रवि  
 प्रसिद्धः प्राधार विना ही पन्नः जो रम्भाधारे मेः  
 करनैः प्राधेयनैतमनांस होयो पुनः कृत्य २७  
 देवो सही तो नो देवत नैनः जंतर वाहर दिसा वि  
 दित बही तो या सुष देन १८ वाती हेरा जन तो  
 नो देवि वनोः प्रार न नो यो हे दुर्लभ जे कृत्य २७



भा. वि.

५९

ताकोंनेत्रनसौदेछोयायातेइसरोविसेस ओरेकन  
इक्राकोअनेकठोरवनेनीयतेनीसरोविसेधजा  
नीओ पुनः तोहिबोलिअतहीलवोसचीउरवसी  
वोम साधुपासआवतलव्योसुंदरवपुअनहोम  
पुनः इलीहसविहसमेतरीहीरतिराम कीयोध  
बलसवतरनगरहेनकोउरसाम २० वार्तर  
कीरतिओअनेकठोरवनेनकोयो अथव्याघात  
व्याघातजुअधुआरतेकीजेआरुजओरवहीर  
विरोधीतेजेवकाजलाईअठोर २१ प्रात ओ



रामा राज करि वेनी वस्तु सौं गौर रामा राज करे जै सै वरु  
ते चरण छोटे वहरि विरोधी ता को चर्ये चरीता  
हजो की यावनी होय सो परा ऐनों इष्ट बाज हो इत को  
विरोधी हो इत हा इत रौ प्याछात नया सुव पाव  
तजा सौं सुज गता सो मारत मार दया करे जो बाल  
यह सगलै चलो भुचार ३३ वार्ता कूल संधि वेनी  
वस्तु हैं ता सौं को ममो रहै यह प्रथमा को ई राजा  
वने बटा को जु वराज है हैं चतुर्थो हे राजा नै कहो बाल  
कइ हा हा हुनै देवत हा बाल की की उक्ति ओ मो को वा



भाग २२ लक्ष जानत होतों इहां रह नों। उचित नही नहीं संगले  
 २३ जाने को कारण बालक सोई प्रवृत्त संगद्वै जाने को  
 कारण भयो प्रलं कारण तना करे पीयबिष्टुतावे  
 धिबेर परिउल दिछे सवहेत जे निरवत सुबदेत  
 ते ते निरवत दुबदेत २३ वाता इह प्रोकारज  
 करे वे को रस्तौं प्रोकारज कोयो मति राम जो  
 पेसबिष्टुज गामे मेघरघराय ही चबाव तो हरि मु  
 बल बिदेत कि न नेन चकोरन चाव २४ वाता  
 इहां बिरोधा लो जे साधये पुनः नहि लो भीध



नदेतहेदारिसेकामानि दाताधनकोदेतहेदारिह  
 संकाजानि २५ वती इहांउत्तरप्रतिउत्तरहेपहसे  
 प्रथमकोइसरोप्रथमविरोधभयौ गद्यकारनमा  
 ला कारनराजपरंपराकारनमालाहोत्र नीति  
 हिधनधनप्रागपुनित्तोसोजसउद्दोत २६ वती  
 येकसेककोकारनहोइरेकाजिहोयकरिइसरोप्रति  
 काजहीकाजहोइप्रेसैजहांहोइसोकारनमालाकी  
 नीतिकारनधनकोधनकाजसोधनकानैभयौ  
 पुनः नेहबढेतेमिलनसखिमिलेबडोमुखहोय



भा. वि. वा. ५३ वा. ६ त. हे. पु. नि. वि. रह. त. न. य. ह. त. नी. ३७ पु. न.  
५३ गे. था. त. रे. क. बि. न्न. वि. ड. प्र. य. ठ. जा. सो. ते. रो. ज. ग. ज. त.  
वा. स. ब. डे. ज. स. ते. व. ठ. न. हं. में. आ. द. र. व. ड. त. है. आ. द.  
ते. म. न. त. हं. व. च. न. आ. मां. न. त. व. व. च. न. प्र. मां. न. हो. त. स.  
पा. ति. क. ह. त. है. सं. पा. ति. हो. त. ही. सु. ध. र्म. लो. स. ने. ह. व. डे.  
ध. र्म. के. स. ने. इ. पा. प. इ. रि. हि. क. ह. त. है. पा. प. इ. रि. हो. त. ही.  
स. र. य. सु. द. ता. को. पा. वें. वा. गे. सु. द. र. प. ने. सु. ज. ग. में. न.  
ह. त. है. २८ पु. न. ल. छ. न. प्र. र. व. प्र. र. व. का. ज. ज. हां. हे. तु. सु.  
अ. गे. हो. त. कारण. म. ला. क. ह. त. है. जा. के. गे. न. ड. हो. त. न.



जथा नरकरोतैह पापते पापति दारिद्र्यानि दारि  
 द्रोत ग्यजाननत दान करन तूठान ३० वार्ता नर्क  
 काज पहलै ब्रह्म पाप पाछे ब्रह्म ग्यअरे कावली  
 ग्रहन मुक्त कीराति यह हे कावालित हां जानि दु  
 ग्यश्रुतिलौ श्रुति वाहुलै बाहु जे छल्लो मान ३१ वार्ता  
 शरब्रौ जोहे सो उत्रर ब्रौ गहे उत्रर ब्रौ पूर्व ब्रौ गहे  
 ग्योगे ही ब्रौ गहे त हां इग ब्रौ न ब्रौ गहे ब्रौ न नै इग ब्रौ  
 नही गह्यो वाहु ब्रौ गह्यो पुनः ब्रह्म जल जह ब्रह्म  
 मल नही ब्रह्म न भौर सुचात नही भौर जहा गुज



भाषाचि  
५३

नहि गुनबैरुलास ३२ वार्ता सुगम अथमाता  
दीपक दीपकरेकाबलिमलेमालादीपकनाम  
आमधामतुवहीद्यतुमतीयहीयकीयविष्णाम  
३३ वार्ता दीपकअलंकारमेवनीवर्ननोएकध  
मेचाहीअै इहाएकधर्मनोअन्यबाह्ये इहा  
नहींलीयोइतनोईजानीअै आमनेतीयनेहीये  
मेधामकीयोतीयनेइदोतुमारइदेमेधामकी  
योभीयोभीयहकीयाहेताकेअन्योनैदीपककी  
ईअवतदीपकमानतहसानहीआमक्रामहीयही



यद्देख्यारहेयातेकोननैतीयकोहोयोगहोतिव  
होयनेतुमेगहोयहरेकावलीजानीगे पुनः  
जनकबालिमेकोजनदतामेत्यामसरोजतामिम  
इमुसक्यानिहेतामेतसेमनोजबूठवातीलेसे  
यहधर्मसौहीपदग्रहनत्यागहोयोगसोरेका  
बालिजहांबर्तामात्राहोतोनतहांदुपकातिसयो  
त्रिप्रथसारयेकरेकतेप्रार्थिजनहांफलंको  
रसोसारमधुसौमधुसोहंसुधाकावितानधुर  
प्रपादबूठवातीयहनलेगुनसोप्रार्थिकाड



भाषावि  
५३

पुनः श्रीं नतलः प्रस्तो लते हल के जा चर जा नि  
पवन नतादि गः प्रवत हे मा गन उर उर आनि ३  
६ वार्ता काहु गुन होय हो उते सार हो २ जथा न  
उसुन ग जाते मुदिता सो हे अस मान ता हते आ  
साव दीय हत नी के जा न ३७ अथ जथा संख्य  
जथा संख्य वर नन विषे वस्तु अनुक्रम संग करि  
अरे मित्रा विपत्रि कौ गं जन रं जन मंज ३८ वार्ता  
अरि कौ गं जन करे मित्र कौ रं जन करे विपत्रि कौ  
मं जन करे य ह न म ते व र न न हे पुनः सरन परे



विषय तल यह नर को मार न हार नहीं छोडे नही भोग  
इधन को रुप न गमोर ३६ वार्ता सरन वरे जो न  
छोडे नही विषय तल जो न भोगे नही द्यन को इहा  
भी जया संख्य ॥ अथ वर्ज्य देव राजा य अपने  
क्रम तेहे आश्रय येन प्रि क्रम ते ज वरे कृष्ण आ  
श्रैल हात अपने ४० जथा हती तरलता चरन  
मैं भई मंदगत आइ ॥ अं बुजता जितो य वरन दुति  
चंदे रहो वनाइ ४१ वार्ता नायका के चरन में चं  
चलना ती प्रव मंदता आइ चरन ले कृष्ण वार्ता



मामादि ७

५५

मेतरतामं हताश्रौभ्याश्रेभर्दे तयत्रौवदनकीडानि  
दिनैमं प्रबुजबनाइरहीयावरातिहेंचं तैवनाइ  
रही पुनः कवाहिसेजतजिप्रवानेमेनुठतिविर  
हडुयपाइ ब्रवहुचंदनपेठमैसोवातिहुसमविश  
१ ४२ वाता सेजआदिअनेभुआओहे पुनः  
प्रथमामितनपीयचाहकीहीयेमैवसीसुआइ  
अवनमित्तौविरहावसेवसीकांमकीलाइ  
४३ वाता इहनायकाहीयेछेकतामेवीयामि  
लनआदिआओअनेभुभयो अथपरिदम



परिचयतलीजे आदिब्रजह थोरै ई ब्रह्मदेत लेत मुनिः  
सुमुनिः को धूपतुलसि ब्रह्मदेत ४४ वार्ता नहं थो  
रै देवै ब्रह्मदेतले यतुलसी ब्रह्मदेत थोरी मुनिः मुनिः  
लेन ब्रह्मदेत ४५ गल ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेत ४६ ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेत  
भर चढे ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेत ४७ ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेत ४८ ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेत  
ताले ब्रह्मदेत ४९ ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेत ५० ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेत  
ह्रस्वपमुसक्याने प्राणपाननकारिः प्राणपाने प्राणनदरे  
प्राणपानि ५१ वार्ता प्राणनदेवै ब्रह्मदेतले ब्रह्मदेतले  
प्राणनदहं नागवतनजानीये ५२ प्राणपरिसंख्याले



भा० चि० परसंख्या इकधत्त चरज इजथल उह रा० नेहू गो नि  
५६ दीयमे नही वसी दीयमे ० प्राइ ४७ वार्ता रेवव  
सुबो ए वडो रानि बरे इ सरी होर राख्यो दीयमे नेह  
हो नि ठहरा इह दे मे नि बरे पुनः भूषन जस नाहि  
एत न है करि वा सु कृत न दोष चषु बुद्धि नाहि नेल  
षे भक्तो धर मान नही राख ४८ वार्ता इहा भी सदेही  
ने नि बरे भयो पुनः बोन धेय भगवाने हे करनी  
बह सत संग वास जोग को बज थली भो थिर रहे  
दि० जे ४९ वार्ता ध्यान जोग भगवाने हे यह वि



विधि ओर नही इह निवेद प्रथमों निवेद है अथ  
 विद्वत्पा समबल को जु विरोध तात हां विद्वत्पा  
 यापि अयाति बलि ना बाइ है अरि को सि रज्ज चापि  
 ५० वातां अरि को सि रन बनो अर चाप न बाव नोय  
 समबल है ता को विरोध है जो सि रन बा अगे तो  
 ल राई न होइगी जो चाप न बाई तो सि रन ही न वे  
 जो पुन मान कीयो साधि जे नते अति होय दो सब कीय  
 ६५ रायि है को हित अरि के के वसि हो है अर ५३  
 वाता ओर न हित अरि गे तो वस न ही होइगी जो



भाषा (1) बस-होइगे तो ज्योते हित नही करेगे ये से जां नी ज्ये  
\* १७ \* गयस मुचे लक्षन दोयस मुचे भाव बहु क्रहुइ क्र  
उपजत संग ऐ ब्रह्मा ज चाहत कीयो हो प्रने क्रको  
ढंग \* १२ \* जातो बहुत बिंबा ऐ क्रको भाव ऐ ब्रही संग  
उपजत हो प्रथमस मुचे प्रोजहो प्रने क्र ऐ क्रको  
जको कर चहे जया तुव प्ररिभा जत गिरत प्रि  
रिभा जत है सतराय जोवन बिद्या धन मद नम  
हउय जावत जाय \* १३ \* जातो ऐ ब्रही समे मे प्ररि  
नको भाजि वों प्रादि कीया उपजी याते प्रथमा



ॐ जोवनविद्या धनं गादिबेबहेहै जोवनबहेहै  
महीमहउपजावेगे विद्याबहेमहिउपजावेगेम  
हउपजावनाकाजसो जोवन गादि कीनोचहंत  
है पुनः प्रथम प्रथमदिग आयपत्रे बोले प्रथम  
वन चकीडरोहिणीहस्ताध्रपारहेनेन ५४ वा  
ता प्रालो प्रालो नायकनेना इकात्रेनेनमंदेन  
तवनचकी आदि कीयारेबनारहीउपजाइहा  
प्रिये अनेनभावभारे पुनः नकुटीलंदबुमि  
पीतपदचटकलटक चलिचाल चलचवचिंत



नागचि  
५७

वनचोराचितलियोविहारीलाल ५५ वाती इहां  
चितचोरनकारजसोभकुटीआदिहैकहीक्रीया  
नैचोरा ५६ अथकारकहीवक्र कारकहीपेकहैकमे  
क्रमतेक्रीया ५७ प्रतेक आतचितेआवतेहैलालपू  
छतचातविलेख ५८ विहारी वतरसलालचंला  
लकेसुरलीधरीलुकाइ मोहनशासतिमुखनट  
तिहैनकहैनाटिजाइ ५९ वाती सुरलीलुकाइ  
बेबेछलनोरिलालक्रीचातैलुनैकौइयसाध्यो  
यातेइसरीपरजावाकिभाभासेहै ६० जहांहै



असंग बहुत भाव उपजे सो समुच्चै इहां करता मे की  
पाए न संग ते नही उपजी या ते समुच्चै नही इह  
तो ज चला ल मुरली सांगै हेत बभौ हसौ इर पावे  
हे मुय सो नटे हैं नव नायक बौ जात देखे हेत व  
इत कहें या मे पं न नायक बौ प्रने क की या हे क  
मते हे या ते कार क ही पक पुन कहत नंदतरी  
मता पि जत मिलत पि लत लाजे यात भो भो  
न मे वरत हे नैन नही स्वयात ५२ वांती भरे  
भौ न मे वात करे या जाति बंद हे ते बे भी बज न



भाष्यवि० यो याति तीसरी विभावना भासै हे वास एव मैत्री  
५-६ या अने कहें याते कारक ही पक्क जानी ॥ प्रथम  
समाधि सो समाधि जो जसु गम्यो रहत करि  
होत उत्कंठित या कहैं भई प्रथम दिन उद्घात ५-६  
वाती नाइ कहने उपपत्ति पै जाइ वे कहैं प्रारंभ की  
यात बस इया भई सुगम भयो पुनः सखी मना  
वत माननी नही मानत प्रनयाय कोल उठी पि  
कनिराखितु निंछु टो मान प्रकृताय देवाता  
अथ गत्यनीच दुषदे प्ररिक्क वस्तु को प्रत्यनी



३३ हभाइ इगनद्वारे कंजते चढे बान परा ॥ ३३ ॥  
६१ वाता चल बान जो सनुता सोतो जो रचले  
नही न बसनु न पक्ष क्रों दुख दें नात हा प्रानी  
बनो नी ॥ ३ ॥ ते ते इगनते हा रिं बंज इग बंजे  
पंछी नान ता पर चढे भरे पुन माति राम तो  
मुख छवि सो हा रि विद्यु भयो चलं चल मेत  
मर ६ ३ ३ अरु चिंद मुखि ॥ मर विंद नि दुख रत  
जाता हे ॥ मर चंद मुखी तेरे मुख की छवी लब  
ल बान हे ता सोतो चंद मो बों जो रन ही चलने



भाषा ३) नव नमल नक्रों दुष देत हे तेरे मुख नये बहनी ॥ १ ॥  
३॥ आया था पाति आया था पाति यात्री योति नको  
बहे इह जात मुख जीतो बह चंद क्रों कहा कमल  
नी बात ई २ जाती जिसने इह श्री योतो इह द्वित  
नी बात है असौ जहा हो इतहा आया था पाति  
जिस मुख न चंद मा क्रों जीतो या तो क्रों कमल श्री  
नहा बात है पुनः भेदि आ पने इह द्वे क्रों निवस  
ति है रुच बाल भेदति गोर निवो ही यो अच  
जन ही विसाल ई २ अचंद्राव्य दिग आव्य



लिंगजहाजगततैः प्रत्यक्षमर्थनहोइ तोब्रौमे  
जीत्योमहनमोहियमेसिवस्राय ईइ चार्ता स  
मर्थनीयजोः प्रर्थसमर्थपुष्ट ब्रैसोक्रायलि  
गमहनबौंजीतवौंक्राठेनहोसमर्थनीयहैसा  
बौंसमथनजीयोहमारहदेमेसिवहैजिनतुमे  
जरावथो **हमः** ब्रह्माक्रामज्यालालनसहत  
होठैब्रं प्राप वाब्रवदनापियक्षमेवहहुरिहेत  
नताप ई **ह** **जयजय** चार्ता जोविलेखसासा  
यादिहतौ प्रर्थीतरन्यास एषुवरबेवरगिरत



भा० चि०  
६३

तरे बडे बरे न कह्यास ईश्वर नहो विसेष अर्थ  
दिह करवो सो सो मां मां न्यः अर्थ राखे किं राखो मां न्यः  
अर्थो दिह करवो विसेष राखे श्रीराम चंद्र जो न  
बल ते जल मे वहारत रे प्रस्तुत विषे अर्थ अर्थ तरे  
तां पुरुष कावे न्यः अर्थ बडे कह्या न कह्ये यह्या  
प्रस्तुत सो मां न्यः अर्थ दीयो पुनः नीचे संग गुनी  
न के चढात उच्च पद पाथ रूल मान के संग ते स्रोतो  
सो स चढाद ईश्वर गुनी न के संग नी चउच्च  
पद की को पावे यह प्रसिद्ध हेत को विसेष अर्थ को



पुष्प श्री यो पुनः वीर्यमनसचिह्नैवौ नृदिनतनसचि  
होतसिगार ल्याषनरौः प्रापिनबटे बटवडाखा  
र ई ७ वाता वीर्यमनसचिह्नैवौ यहकठिन  
तात्रौ पुष्प श्री यो पुनः बडेनहुजेगुननाविनविर  
दवडाईपाइ क्रनक्रधतरेलौक्रहेगहनौगढो  
नजाइ ई ८ वाता इहांसांमोन्यक्रोचिसेतसौ  
दिहक्रीवौ गथाविनस्य विनस्य होतचिसेव  
जेवपुनिसांमोन्यचिसेव हरिगिरिधा योस्त  
पुरषभारसद्योज्योलेष ई ९ वाता चित्तवभ्यर्थ



भा. वि.  
हं

को सा मां न्य अर्थ ते पुष्प न चो प्रेरि सा मां न्य को वि  
सेष अर्थ ते पुष्प करे त हां वि करार ऐ न हरि ते गि  
र ध न्यो यह विसेष रत पुर ख संतार मे व ड ला  
ए ज करे हे य ह सा मां न्य तार को पुष्प द्वि यो विसेष  
या त सो अ व त ई से स ना ग भा र ध र हे य ह वि  
सेष जो ब सु बहुत आ सि द्ध न हो इ लो विसेष जो  
बहु त आ सि द्ध हो इ लो सा मां न्य पुनः सुंदर ता को  
सी मत व बो ल त व च न सु बं क गु न मे ऐ गु न  
द व त हे अ यो सा सि मां ह क लैं क ३० वा की प्र वी



मैविस्तेयहेउत्रापुमैसांमांत्यहेःओप्रैविस्तेयक  
ह्यो पुनःमातिराम मधुपमाहिमोहनतज्योय  
हस्यामतनत्रीरीति बरोःआपनौकाजलगुतुमेमा  
तिसोपीति पुनः भावीबडीसुषवलहेतजातिन  
अपनौःअंग रंभचंद्रध्यावतभरेपुनब्रह्मिन  
केसंग ७२ भाती भावीब्रीषवलताविसेसमे  
सेजानौःअथआठोत्रि ओढोत्रिउतब्रह्म  
ओकैरेःअहेतहेतु नमुनातीरतमालतरतेरवा  
रअसेत ७३ भातीजोउतब्रह्मब्रह्मनमहे



भा. वि. ताको कारतनवनेता हो प्रो. डो. जि. जा. नी. ग्रे. रहा.  
जमुना के तट मै तमाल की उपाजि बौ. स्थ. मती.  
को. प्र. हेत तमाल. प्रा. पे. स्या. म. होत है. प्र. हेत त.  
को. हेत टहरा यो. प्र. तं. कारतन ना. च. र. चंदन. कु.  
द. व. पर. दु. ल. ह. त. न. ता. की. हो. र. कहा. सं. भु. को. ला.  
स. को. कहा. सु. तु. ब. भु. च. को. २७४ या. ती. ब्रै. ला.  
स. को. रा. हि. वों. सं. भु. की. गो. र. ई. को. हेत नही. ता. को.  
हेत टहरा यो. म. ति. रा. म. गं. ग. नी. र. वि. धु. र. वि. धु.  
ल. व. म. इ. मु. स. भ्या. न. उ. हो. त. क. न. क. म. व. न. क. दी.



वहौं जगमगाति तुव जोति ७५ वाती गंगनीरमे  
पाति विवसेत क्रोक्रान नही ता को हत ठहरावो  
जैसै जनन भौ न की जा नी ७६ अथ संभावना  
हो जो यो जो होत तौ संभावना बिचारि बहता  
हो तौ से सजौ लहतौ तुव गुन पार ७७ वाती जहां  
जैसी तर बबरे जो से बब बहता होतौ तौ गुन क्रौ  
पार पावतौ जहां संभावना जो नी ७८ पुन बिहा  
हो जो बा बहै न की हसा देख्यो चाहत प्राप  
तौ बालि नै बह बिहो क्रौ ७९ बालि ७९ चब चब चुपचाप



ध्रुवस

माधव  
६४

७७ यद्यमध्याति मिथ्याध्यवसति जूठन को  
जूठन हरीति करे जु माता न भगु मन करे नगरी  
यपीति ७८ वातरे रे वज्रं हवी सिद्ध वेली ७९ इस  
री जूठन हे सो मिथ्याध्यवसति नगर नारि को पी  
ति कर नो जूठ ताकी सिद्ध वेली ८० न भगु मन करे  
माता जूठ ८१ जहां जह उदाहरन हे कर मे पारद  
जो रहे तो करे न बो दा जी ति तहां मो न बो दा जी  
ति जूठ ताकी सिद्ध वेली ८२ कर मे पारद सो जूठ  
मति हम बल वचन न की मधुरत च धी स्ना पानि



जंशोन रोमरोमपुल्लित्तमरेकहतवउधग  
हिमोन ७६ वार्ता खलचचनननीमधुरता  
ठ नावेहितकेलीअंसायओनआदितेसवज  
ठ अयललित लालितकह्योअधुचाहीअ  
ताहीकोअतिविच सेतवादिकरहेकहअ  
अ वत्तउतरोव ८० वार्ता प्रस्तुतकोइवचन  
कह्योचाहीअ ताईकोछोअवेवाकोअतिवि  
कह्योकोइरचनाकरकेतहांलालितअ  
आरजोंनीअआतहतारितामायअनायक



भागवि०

बोमना बने बौस यो पठवे है तहां स यो बी उक्ति  
न ब म ना इवे को प्रा यो न वेत प्र ना द र की यो  
प्रस्तुत ना इका ता सौ इ ह वा त न ही की यो है ता ही  
की छाया ले के प्र ही प्र प्रस्तुत वा त पा नी उत्तर  
गयो पाछे तू वा ध वा ध ब्र ब्र हा ब्र रे गी पुन म  
तिराम मेरी सी धा सि ये न सा धि मो सौ उठति रि  
साय सो यो चाहति नीं द भ रि से ज प्र गा र वि  
छाय २२ वांती मेरी सी न ही सि ये नु ब ह त उ  
वी हो इ गी ए ज हि न ब्र ल न ही ये र गी ता की छे य



अप्रसन्न इतरी वातं ब्रही सोयो चाहत इत्यादि  
प्रथम ~~प्रथम~~ तीनि प्रहर्षन जतन नावेन वां  
छित प्रलजो होइ वां छित इते प्रधि ब्रह्मलज  
मावेन लही प्रसाइ ~~२२~~ सो धान जावे जतन  
बौ बस्तु चढे ब्रह्मसाथ जाबौ चित चाहत होत गा  
ई इती सोय ~~२३~~ आता जाबौ मिलन बौ उच्छंदा  
थी सो जीया इती वनि आई जतन नावेना मन वां  
छित की सिद्धि भई यात गायन पुनः विहारी अ  
रिषरी सट पट परी विधु गाधे मग हेर भीरूप



भाव वि० ॥ रैभौरनुलई भागनगली प्रघोर २३ ग्रामरेरीभी  
॥ ६६ ॥ आरसी प्राति विंवाति पीयपाड कीरिदुआनिह  
खलयेकाटकदीहिलगाड २४ जया दीपक  
कौउछामनरोजो लोउयेयोभोन वालो थोर  
जकासवांछितथोभोनउदेभयोवहतप्रभाम  
आधिक्कफलभयो पुनः प्रातिराम बाहतसतपा  
बतसहसगजपावतहेचाहि भावसिंधेरदोन  
मेजगतसराहतताहि २५ वातां चोहतप्रख्या  
वतगजइत्यादिजोनीजे गयतीसरी निधि



अंजननी प्रो यही सोधातल घोनिदान २३  
तै इव वस्तु ब्रेशा प्रिन्न उवा इन्न सोधातमं इव व  
स्तु मिलैंतराती सरी प्रहर्षन निधि अंजननी प्रो  
यहै सोधातमै निधि मिली पुन माति राम हरि  
नी सुधि ब्रौ राधि का चली प्रबले भोन हसत वी  
च हो मिलि गरु वरानि सने सुख ब्रौ न २४  
हारि की ब्रह्म सुधि मिलैंतरा हो हो जाँउ सो हारि वीच  
हो मिलैंतरा हस्तु ब्रौ न वराने अथा विषाद सो  
विषाद चिंत बाहने उलरा ब्रह्म है जाइ नीची



ना. चि. ॥  
हैं ७

वासतश्रुतिपरीचरनायुधधुनेआइ ॥ २२ ॥  
तीनाइकनाइकातेरातिमेंसंभोगचाहेहैतबहु  
बुरकीधुनिमुनिप्रातभये। प्रातसमेंरातिबर्ज  
तेहेप्रातेचितकीचाहतेउलटाभये। यातेविषा  
६ विहारी रातिछोसहोसहोमोनुनाहिब्रह्म  
राइ जेतो॥ ओगुनहूढी॥ ओगुनहूढी॥ यवारिनाइ  
२२ वाती॥ ओगुनकीचाहसो॥ गुनप्राप्रउलटे  
॥ प्रथोप्रास गुन॥ ओगुनजबरेबूते॥ ओरुधरे  
उप्रास हाइसंतपावनबुरेगागधरेइहमास



६०॥ वाल्मीकि जहां से ब्रह्म गुन दोष और ब्रह्म गुन दो  
ष रहता है सो उल्लास है ब्रह्म गुन ते और ब्रह्म गुन  
है ब्रह्म दोष ते और ब्रह्म गुन है ब्रह्म गुन ते और  
को दोष है सो चारि तरह उल्लास जानीये गुन  
ते गुन जया संतन की महिमा गुन ताते गंग की  
पावित्रता गुन अथ दोष गुन लाभ वडी जो  
कुसरत से ब्रह्म निज धर जाइ वाल्मीकि इहो राजा की  
करता दोष ताते से ब्रह्म को बंधन बिना कुसल  
धर जा ल्यो अथ गुन दोष है अथ भाग धन को



भा. वि.  
६८

वडोसेवतसंतननाइ ६२ चार्ता संतननकीमहिमा  
गुनधनकीअसेवनोहोव्य अथहोव्यहोव्य  
करेकठिनकुचकीनाहितमृदुतचरनधार निंद  
तिहोभाजनसम्येवि। धीकींतुवअरिनारि ६३ चार्ता  
इहांराजाकेइरनेभागिवेमैअरिनारिनकेचानकी  
मलहोइहोव्यनासोवनावनहाएविधातकीहो  
ववनयो अथगुनतेगुन सखासंगआधतहस  
तशमनभउपैनइलाल देवतहोअंकुलितभयो  
चित्रहमारोवाल ६३ चार्ताइहांनैइलालकी



प्रसन्नतागुनतासौनाइकाकोचित्रगसन्नता  
गुन मतिरांमे दहीछीनमोहनलोयोसधी  
सधनधनठोर बडोभागमतमेगन्यौजोनही  
योफधुग्यौर २४ नातो इहोनाइकाकोहही  
छीनलेनाहोयतासौनाइकाकीधर्मरह्यागुन  
विरहि भरिफुलेलको जाचमनमींठोबहत  
मराहि गंधीगंधगुलाबको इतरदिखाव  
तकाहि जातैवेसर गुनतेहोवगोरसबैहर  
धीप्रैगांवातिभरीउदगह त्रकुनिलांनीको



भा० दि०  
६६

बहुलाविदेवरको व्याह ६६ दोषलेख रेचं ६  
नवननभोजजोहो हो कवे विनास आ पुस्तमे मि  
लेक्रेक्रेहं आगि उडे वास ६७ अथ अथ सा  
होत अथ ग्या अथ कोल गै न गुन अथ दोस पर  
सि सुधा अथ द्वि एनिते बुले न ये कज जोस ६८  
अथ काह के गुनते जोह काहना होइ काह के दो  
षते काह के दोषन होइ जैसे इहां चंद्र मोने गुन  
ते कमल न को गुन न भयो पुन जो दिखे मेरे  
त नही अथ ये नै न उलूख जगत अथ अथ अथ



ॐ हा ह हो वे च भ्र ३ ३ वाता इहो उलूख जी प्रंधता  
हो सते सूर्य को दोष न भयो पुन मलिराम मे रह  
वारि वृथा वार वात वारि प्रवाहा उदत प्रभु ने  
ह को तो उर उर माह ३० वाता इहां मे छवे गु  
न ते उर को गुन न भयो बिहारी सीतलता सु सु  
गंध को धटो न साहि मा मूर पीन स चारे ज्यो तो  
मेरा जा नि बर १ वाता इहां पीन स चारे वे दो  
ष सो वर को दोष न भयो प्रथम पुन सीतलः  
होत पुन जा जो चहे दोषाहि को गुन मानि हो



भा. चि. ७ शविपातिनामैसदाहीअचदतहरिआनि २५  
७७ ती विपातिमैहरिकोस्मरनचोहोतहोतहोतहोत  
विपातिदोषताहकोगुनकारेचाह्यो पुनविहारी  
जोनजुगतिः चाली प्यारेकोमिलनकोदोषता  
कोगुनचाह्यो ॥ ७७ ॥ गुनकोदोषरुदोष  
कोगुनकरनैतहोलेस सुकइहमधुरीबानितेव  
धनलह्योविलेस ३ चाली मधुरीवचनता  
कोदोसठहरांयोसुकबांधोगये पुनरुप  
वरेपूलनकोलेतस्वाहमधुचाव विनयाक्रम



धुरी वा नितो नि धरुं डो लत वा ४ वाता वा ४  
वां नी हो वता ही में गुन मां त्यो म्पति रं म वात स  
नी दे प्रन म नी ग सु वा भरति सल न वडे भाग म  
दला ल के प्रं ड ह लगत न लं २ वाता वा ४ लं नु हो  
वता वा गुन मां त्यो म्पति मुद्रा मुद्रा वलुत पद वि  
ये प्रो रे नि न्ने रं ता म तो हि म ना वत को न्ने हे मा नि  
न हो हा त्या म वाता इ हो प्रलुत मा इ का वु व न  
न म हो हा को म्पति रं दो इ ह हां क्पां न्ने रं हे प्रो हो हा  
ये इ को म्पति रं न्ने रं त्यो पुन वि हा हो वि त ल प डे



महावि  
७३

७ ७ नः नरहनि पीबो मे सुनी गो वा मोहि न सुहर ने  
नसरे बाहर रहे जंत वि सारे जाइ ८ वाती नरह न  
मो ७ यथौ नही रह नो गो ग वा ग गो सरे सा ७ जावे न  
गो नरह नि गो वा हि दे सह गे म दे सा दि क वे र जो  
है तो मे मु द्रा लं का रहो त हे इहां बनी वन न ७ ७ प्राप्त्र  
य न ही पा ने मु द्रा ज हां बनी वन न ७ ७ प्राप्त्र द हो इ  
लो श्रेष्ठ ७ ग थ रा वा व नो रत ना वाली प्रस्तुत ७  
रथ च मने ७ गौरे नाम रसि च चतु सुख ल छि  
पनि स च ल द्या म ८ वाती ज हां ७ यथौ को प्रसंग

ग्या न को



इहेत हां कमसौं ओर है बै नां मानि करे सो रात ना बली  
इहां प्रसूरा जा के वन न मे प्रसिद्ध न मही सो चतुर्भु  
खंछा लछमी पति बि सु शान को धाम सिव  
जा नौ जे पुनः लांच गुणि कर को लख्यो भीम  
सैन को जोर बिजे बिजे को तोहि मे धन्यो विधा  
ता चोर २० वांती इहां राजा के वन मे कम ही सो  
गुधी कर भीम बिजे प्रजुन को नां मराख्यो पुन  
र बिते रते जाहि कर तुल्य मसी लको देत मे गले मे  
गले गुणि बुध भयार चत करहेत ११ वांती प्र







नं सते उज्जल होत दीपमिराए रहनी योरसनामन  
उदेत १६ वाता सेर लखेत हे सो सिद्ध प्रतीति विते  
स्यामभयो प्रेरजससौ मिल उज्जल भयो स्यामनात  
नः प्रापनो गुन लीयो अर्थ इसरो दीपमिरां जे हं प्रभा  
सत्वं गुन नमिटी अछति व वदन चंदनी चांदनी  
देह दीपकी जोति पति विते हलाल बाहि भवनरा  
जि सो होति १७ अथ गुन सुप्रत गुन गुन गुन  
नाग हे संगति को जिहि हाहे दीप अं नुराणी नाभरे  
वंसिरागी मन माहि १८ वाता मन रंगिने हे जोर



भाषा

७३

नरे संगमे रहते हे सो रेगी न होत हे इहं ज्ञा इहं मित मे  
वसत हे तो वीरं गी न यन म यो म न को रंग न ही ले गे  
विहारी ये रो य हते सी दर्श १६ प्रथम प्रन गुन ल छन  
प्रन गुन संगति ते जे व पूरव गुन सर साइ मु चत मा  
ल ही य हा सते प्राधि ब स्वित है जाइ २० वाता भु  
कता प्राप स्वित है हां सत्र प्रका सते प्राधि ब स्वित भरे  
प्रथमी लित मी लित जव साइ स्पते मे इज वे न  
लयाइ प्रहनं वर नती प नार न मे जव बल लब्धो न  
जाइ २२ वाता इहा चार न लला ई को प्रो महा वर



की समता है तो ते मे द नही भासे या ले नी लि त जानि  
विहारी नर्त बास अ नुरागता ० २२ अ बास नान्य  
सां मान्य जु सादृश्यते जानी परै विशेष नाहि फुरत  
अति कमल अरु ती पत्नी चित्त अति मेय २३ बास  
ती पत्नी चन अति मेय मे जो अति कमल जो है नो मे  
मे द नही फुरे नहां दुसर पदार्थ जु द न भासे नहां  
मिलत होत है जो सां मान्य मे पदार्थो मित्र भिन्न भा  
से है ये मे द न ही भासे है ये से जानी अ ज  
यानी लि त उ नी लि त सादृश्यते मे द फुरत वंश



भा. वि.  
७४

न कीराति प्रांगे नुहि नागि रिंछुरे वरत है जो न ३४  
वाती दोय पदार्थ भिन्न भिन्न जाति यह होता है सो  
मिल गई होइ ता भेद जो ईद न भेद फुरे सो उमीलत  
जो नीचे की निशो रहि मान्य भिन्न भिन्न जात है  
ता को अप्सर्ष्याने ह्यया भयो मीलति द्विषते उन्मी  
लत जा न्यो जाइ बिहारी चित्ति चंदन वैदी ॥ अथ  
बिसेष यह बिसेष बिसेष ऋषु फुरे जु समता नाहि ति  
यमुष गह पंढु जल ये ससि सरसन ते साहि ॥ ई व  
ती समता मे जहा बिसेष फुरे तहा बिसेष अलंकार है



नायका जो मुख मोह मलसाभासहे तेचें इतर समने  
सो मवे धेजांनी परतहे यहै तीय मुखे यह कमलहे  
जो संभुचितहे समान अलंकार के विषे न मे विसेया  
लेकार जांनी ज्ये ~~अकार~~ गूढांतर कथुभा  
बने उतर दीनो होत उनचेतनतहमे बहाउतर नम  
कसेत २७ ~~जाती~~ जहां कथुभा बने उतर दीनो सो  
होतर जैले जो उपाधि कउतरने लाइकन ही कोछार  
इछोत हांन इकाने उतर दीयो स्वेत सकेतें देखार  
उतरि वेलाइक हेत हां उतर दो पा नें गूढ भाव यह हे



नाथचि० ॥ ६३ ॥ हां निज न अस्यान है निखे विहर रङ्ग रंगे पुन  
७३ ॥ या पहार के गाम मे मिले न हीं ब्रह्म आन उन्नत न दे  
विषयो धार न वसी ॥ ३३ ॥ स्याम सुजान २८ वात  
पयो धार मे छको नांम हे ॥ ३४ ॥ कुच को जानीये अ  
थाचि नाथधार चित्र प्रसन्न उन्नत जहां ऐव च न मे सो  
य मुग्धा तीव्र की के लरु चिगे ह को न मे हो ३ २८ वा  
ती ने ह को न मे हो ३ यही प्रसन्न यही उन्नत मे सो  
३ जहां हे व प्रसन्न जने ब्रह्म उन्नत ऐव सुचित्र को न  
प्रसाद न है जगत को न दिखत सखा मित्र ३५ वात



इहां मित्र को है जो न जहां इहां पित्रनां मत्सर्जने को जो  
सने हा को इन्हें न है ~~अथ सत्सम~~ सत्सम वरः आस  
यल्लेखं करे की या नृधुभा इ प्रेदेष्टो उन सीम मनि  
ने सनल ईष्ट पाइ ~~उर धाती~~ वर के मन की गतना  
इहां जो न ग ई त च न इन्हें ~~अभिप्राय~~ सहत चेष्ट  
प्ररीमानि ने सन मै ठ पाई हमारी तु मारी मिला पर  
सूर्यः प्रसन्न समे हो इजो इह जनायो ~~अथाविहित~~  
विहित छाप पर बात नैं जो न वितावे भाव आतहि  
आहे से ज प्रीय ह सिद्ध बति नीय पांच ~~अथाविहित~~



७६  
इहां गुरु पराई वात नौ जांत चै ब्या बुरै नं हा प हिले नं  
ने नार जांतो ॥ जय ब्या जो न्नि ॥ ब्या जो न्ति ब्रधु यो  
विध न्ने हे डरे ॥ गार स धी सु ध नि ने न्ने न्ने रे न्ना वि द  
रय मानि हेर ३३ ॥ ब्या ती इहां न्ना इ ब्या न्ने स धी सो न  
बधत ध पा यो सु न्नि ॥ ब्या ठ ह र्ना ई ठे न्ना प न्ति  
बचन ध पा य नो हो वे हे इहां ॥ गार ध पा यो ब्या  
ने ब्या जो न्नि वि हारी ॥ गार च न्ने डरा बने ३४ ॥ ब्या ती  
॥ गार न्ने रे न्ने न्ने ॥ ब्या पा सा त्त्र न्ने डरा यो ॥ जय गढो  
न्नि गढो न्नि मि स गोर न्ने न्ने जे पर उप दे स न्ना नि



सद्योमैनाउगीप्रजनदेममहेस ३५ **वाता** जोवा  
तओरनेकरनेहीहोइसोओरबोवहोसोअहोत्रि  
अलेनारहेनाइकतेचहिवेजोवातसोसधीत  
हीनायकसोसुनायेअथपरिचरितोत्रि लेख  
योपरगदभीजेचत्रोत्रिहेअनचषभाजोपरिषत  
सोकरितनतायोलेन ३६ **वाता** चषभानांमवेन  
कोहेचषभनांमजारजोहेवेतनांमवेतजोहेवेत  
नांमइखीजोभीहेसनेषसोवातछिपिहेकबिनै  
शंगदकीयोलेनवताइकेचहतहेअथ







Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



ग्रावचि० होइ एसि कृष्ण पूर्व होवी या वुरी ब्रह्म तन ही ब्रह्म ४३  
७८ पुनः ~~गुरुवात~~ शेष ब्रह्म यहु हुन ब्रह्म अर्थ कल्प  
ना होय वक्रोक्ति तहां ब्रह्म तेहे का बिब्रो विहसव  
होइ ४३ जया जु यति न ब्रह्म गन मे सने हरनी भा  
षत होति ब्रह्म ब्रह्म तेही सखी भारम्भ गानि ब्रह्म  
होति ४४ वाता जहां कोई वात स्वस्ते प्रेतौ बि  
वास लेबु सो और ही अर्थ ब्रह्म ते तहां वक्रोक्ति  
अलंकार जा नीजे इहां रहले उहां हरन मे स  
खी ब्रह्म उक्ति मानवनी सो तेही वा य अंक्या ब्रह्म



अथ समासात् त्रिंशत्संज्ञां जहां जानीये करने  
जाति सुभाइ हसि हसि देखति प्रीति हसति मुह  
सोरति सतराइ ४५ वार्ता जहां जाति गुन की  
याकी बर्नन करे जहां समासात् त्रिंशत्संज्ञां कर होत  
हे विहारी डोरी लार् मुनन की ४६ पुन- प्रसन्न  
हार ही ज्यो लोसे ४७ अथ भाविद भाविद नु  
त विषय सा पत पहेत बन नाय बंदावन मे अज  
बह हसित लो दे जाय ४८ वार्ता भूत जे की छे  
हे बुच्यो भाविष्य जो जोगे होइ गो सो जहां पत छे



७८  
१०० वि० होय सो भविष्य लंकार की बंदा वान मे प्रसर मान  
य प्रसंधा नेहे जो लीला प्रांगे भई है सो प्राज दे  
धो जात है किंवा जो प्रांगे होइगी हो नहार सो मत  
छहे विहारी यो रत्न मलीयत ४६ वार्ता जो ध  
र धरातुरत प्रारंभ मे भयो है सो प्रब है प्रब  
तल प्रब हे उदात्त संपाति चरति श्रां व्य चरित प्र  
ग संग रि सि व प्रजुन की यो या दे सि वर प्रभंग  
५० वार्ता बड़ी संपाति के चरि न को वर्न न के रे किं  
वा श्रै स जो सुनि करे नै लां यं क ता की प्रं पां प्रो र



को सें गहात तहा उदांत प्रले चारहे इहां वर्तते केव  
 नन मे प्रष्टेय प्रथ प्रदुत लंकार प्रदुत जूंठी  
 बाल जहां वने प्रति सय रूप जा चक्रने रे दान ते  
 भरे कृत्य तह रूप ५१ पुनः प्रदुत जूंठी वात ज  
 हों वरने बहुत वनाय दान सुरता आदि द्यस्य  
 सुक विटाय ५२ वात जहां प्रदुत गो जूंठी ना  
 त आधि ब्रह्म रि वने सरता उदारता मेत हां प्रत्युति  
 प्रले चारहे इहे राज जने रे दान ते जा चक्रने रूप त  
 ह भरे यह प्रदुत सुवात हे इहां दान की आधि कता



ना० चि० वि० धारि० जों धाई सी सी ० ५३ ० प्रथम नीत कल धन  
५०१ स्तोत्रिस्तत्रि जव जोग लौ ० प्रथम कल्पना ० प्रान ऊधो  
कुवि जान सभ रे निर्गुन बहे निदान ५४ चत्तरी  
जहां जोग लौ ० प्रथम कौ ० प्रारं प्रथम कौ रे य ह जो नी  
को निर्गुन श्री कल तामै सत्वर ज रे गुन न हो इहं  
निर्गुन कौ ० प्रथम कौ यो जा कौ ह य सी भि गुन की परी  
क्षान हो इ ० प्रथम नी देखो कुवि जा मै कौ नवा लौ  
प्रसं नम रे ० प्रथम प्रतिवेध लौ प्रतिवेध प्रसि  
द ज हो ० प्रथम निवेध यो जा १ नी क्षन वों न विना



हैनही जुवाइर ६१६ संवत्सरी जहोरे कृतसिद्धवत्सुहो  
कोंनियेधोरे सब जानत है ताको जो निषेध कर नो सो  
निषेध असिद्ध निष्ठा मां हो ॥ ६० ॥ ओर अर्थ भासेत हां  
प्रतिषेधा लंकार जां तो ॥ ६१ ॥ जुवांनी जुद्ध हो जुवारी  
जुद्ध की तयारी करी हे ता सो ॥ ६२ ॥ न की डाक्रे जुद्धो  
जुवांनी हो हे दाह वात सब जानत है यह जुवांनी जुद्ध  
हे यह असिद्ध सों निषेध ॥ ६३ ॥ अनूप जुक्त हो ॥ ६४ ॥ ओर अर्थ  
में जाइ चमत्कार पायो जुवां मै नुमारे जोर चतुराई च  
ले लपारी नही यह ॥ ६५ ॥ ओर अर्थ ते हां चमत्कार पायो



भावि

८१

वक्रा

प्रयागे गले मार प्रलंकार विधि सिद्ध जो प्रये  
 माधी प्रये जो किल हे क्वे तबे गिरनु मे नरि हे दे  
 ४६ वाता इही को किल तो सिद्ध है ताको देर ला ध्या  
 इसरो को किल मधुर ध्वनि ब्रह्मा प्रये हेनु  
 प्रलंकार हो न हो कार जन न संग का रजकार  
 न रे ज बेल हत रे नता प्रंग ५७ वाता का रज कार  
 रन के संग वाता किंवा का रज कार न रे नता को प्राप्ति  
 हो प्रयागे अरे न भयो सार स मान नी न मि दा वन  
 का न मे ररे निस मरि य हते रि ह पा व ध्यान ४६



याता चंद्रोदय कर्ज मंन छट नो कर्ज जा नी ये श्री  
 राधा कर्म श्री कर्पा कर्न रिधि स म्मादि कर्ज ता की  
 रेकता कर्री कर्पा इ रिधि स म्मादि हे याते हेतु लंकार  
 पुनः विहारो ब्रह्म सवै वैरी दी. ग्रे. ५. चाला तीय  
 के ललाटे में वै ही देरी कर्न उ होत बढ नो कर्ज सो  
 साय ही वर पो याते प्रथम हेतु पुनः को उ. को रि.  
 हे याता जडु पाति सं पाति कौ कारन है सं पाति कर्ज  
 ता की ऐ कर्ता कर्री इतो भाष भूषन प्रलंकार भा  
 या भूषन में न ही प्रलंकार है आठ ते प्रवहरी कर्व



माधव

८३

कहत है देख संत नृत्या ६२ प्रथम सुख लंका  
प्रत्यक्ष सुमन इंदु मेलित सो उदये ज्ञान पीठ दी  
तन प्रारसी मो इतिहरति ज्ञान इति वार्ता इहं ते  
सो प्रत्यक्ष ज्ञानी जे विहारी कुंज ने नमं जल नदी  
दे ६३ वार्ता इहं भीने नन सो प्रत्यक्ष भवो हे मेघ  
जीयो त्रिभासे हे पुनः गली ग्वेरी कुंज मे ६४  
वार्ता इहं तन सो प्रत्यक्ष भयो पुनः सुरति नता  
लन नान नदी ६५ इहं अथ न सो प्रत्यक्ष भयो अथ  
अनुमान अनुमान जो हे तन होत साध्य न तां



सति बदनौ हे मे वसी जानी प्रगट्य मान ईई वार्ता  
तुमारे प्रंगन मे न भाग है हे सो हेतु है गलो निश्चो श्री  
यो लो साध्य दे हे सति बदनौ नौ बा ससाध्य उत्वे द्या  
मैं निश्चै नहीं प्रनु मान मे पदार्थ मैं निश्चै हो ते हे व  
ही वी चहे रं चान्ते नहो अदि ६ नौ हेतु तहं जान  
लेत प्रनु मान अं न्यत्र प्रनु मान को स्रधौ लख  
जान ई ८ अथ उपमान उय मान तुसा इत्यन्ते अ  
नदेव्यो लाखि जाइ ना वरु पायिता नारना न्य भाग  
न नयाय ई ९ यथा जाकी बां नी मैं मे ले नौ निल



भारत  
८३

स्वरप्रनुहारि मुखहे जाकृतं इंदु की सो रव्यमान  
कुमारि ७० वाता वेतईहे अथ स दानं काल  
सब सुसुनिजे चनन जहा बचन वेद परधान वि  
जबं ठी हरि भगति नहि लहे नगुर विन जपान ७१  
वाता इहां वेद पुरान नम मानहे अथ अर्थ पाति  
जहां अर्थ है व्यार्थ है और अर्थ हर अर्थ देव देत मो  
दो रहै दिन मे भु न लखा ७२ वाता दिन मे नही  
वायु जो मो र है है यह अर्थ पाति इहो इहो रात्री  
मे भोजन भरत है इह अर्थ हर इहो रात्री मे नवाता



तो मोटो नही रहतो पुनः विहारी कहे सबेरे बिबिध  
लेखे ० ७३ यात्री विरहरूप आये उपजाइवै। सि.  
इकर केने अया मान डहरा रे इहां और अलंकार  
भी हेतो भी चमत्कार अर्थ पति ही सों हे अक्षय  
इत नही जां नैं किन भी बही चलि आवै जो धात  
अक्षय मय जां नी जेत हां अइत विख्यात ७४  
पुनः विहारी न करुन डहरा बजग बहो ७५ यात्री न करु  
रुन डहरा दो अक्षय मय कान ही जां नैं जात अलंकार  
रलो को किन ही अक्षय नु सच नाधि नहां अभाव



नाम चिन्ता  
८६

वे ज्ञान होत विसेष सुभांन • प्रनुपत्य भाधित  
जां की • वै धर्त तल वे सयांन ७ इ यथा मोहनवे  
बल भरन को तो नै नाहि सहांन सखा सहेली लंगधी  
ताहि पौर नहौ जांन ७७ बानी बल भरवे को जांन  
बाबो • जभा सहे जो होतो तो जांन वे मै • आवतो •  
थार सवत • प्रलंकार रस वत जहा रस भाव जो होइ  
अंगार स • प्रा • बिल सत ही जो • अंग मला गिने नह नह  
न सखाइ ७८ बानी को ई रसी मीर पर विला फर  
रहे ते हवां सी जो नाय कात सो देखे मै नही • गावे



ॐ गंगारौ स्मरन् नरै हे ॐ गंगारौ करुन को विशे  
धहे नै भीज हां समरन हेत हां दोष न ही ॐ गंग  
हेत ॐ ॥ जय ध्यान इहां करुना य ध्यान है ता को ॐ  
गंग ॐ गंग भयो पुनः भूपसु ब्रह्म मनि रां म को चंद  
न हे सुख पाइ ग द्यो काल को द्वजत नै हो नौ तुरत  
निवाय ७ ६ वाता भूपसु ब्रह्म मनि कहे श्री राम  
चंद नां नो किं बाई स्वर इहां राज बिषे ई स्वर बिषे  
गंग बिषे इल बिषे एति हो इत हां मा बही रहै हे  
अह निर्वदस मा प्रनामो मेरी तरु श्री योह गौ



भावविधि

८५

रहं रतिभावकौ प्रपन्नतरसंगे प्रयौ प्रयय  
यत्नता प्रयत्नतरसभावकौ होइ भावजौ संग  
रामरदतकव प्रवाधे में प्रिरो संतक संग  
वार्ता इहां संतरसमें चित्तसे चारी भाव संग भयो  
इमं धरत वित्तबौ उदरमें करत प्रसुर कौ नास  
ऐसे श्री भगवान् में वसौ चित्र सहलास ८१  
वार्ता इहां नीरसकौ रतिभाव संग भयो प्रय  
उरजत्न उरजत्नतरसभावकौ संग इहां भास  
नयतु वं वं रीति यत्नसौ भी नरसत्तु इलास ८२



वाता भावमेरहमे ॥ आभास या द्वौ ॥ परस्परसभास  
त्रिभाभावभास नीचनीरातिउतमाविष्येसो ॥  
गारहौरसाभासमानहेसोराजविषयवजोरति  
ताहौ ॥ प्रगभयो ॥ अभास भास रसाभास ॥  
नाचितनरैपितापुत्रसौरारि हसीनरगुरदेव  
कीरमें ॥ अगंम्यानारि ॥ २३ ॥ जहां ॥ अनुचितहो ॥  
जहां रसाभास ॥ अथभावभास सभुल्लुति ॥ नस  
पुनीवेष्टादिनमें ॥ राज भावाभास ॥ यौलुव  
सोसातिलुगुन ॥ २४ ॥ जहां ॥ सभुस



मा. वि. ११ सुतिष्ठैवे स्यादिभ्रमेत्वा जहो इतहा भावा  
भास अंगसमाहित भावसांतिरसभावकौ  
अंगसमाहितज्ञानं गर्वतज्योसनुन नृपति  
तुवभारदेवि अयान २५ वाती रसज्यो भावकौ  
अंगजो भावसंतहो इतहां समाहितजानी गै इ  
हां गर्वसंचारी की सांति सो राजरति भावकौ अंग  
मयौ अंगता बोदय जहां भावकौ उदया सुत  
हं भावोदय कविता सौं कहै २६ अंगविहारी  
प्रतिप्रति विलस्यो हो लोति प्रियि प्रियि मिले तास



होसिरचसेतलोवींत्योचुनतकवास ८७ वाता  
इहांविद्याहसंचारीकोउदेजानीये भावना  
धि जहांभावकीसंधिलुहे भावसंधिसंचिताको  
कहे वातासमाप्रकाशमेतछनउदाहरनबहु  
जहे विहारी कीयविद्यरनकोइसहदुखः ८८  
वाता इहांविद्याहस्येविहदभावकीसंधि ८९  
भावसाकल्प दावतभावहिभावजोउपाजिप्राप्त  
इकजंगल हिमभावसावल्पतिरजनेविसुभानि  
जंगल ९० वाता इहांसेनभावकोइकभावहवा



भा. वि. ०

६७

वैद्वत्सराभाजउपजैसोभावंसावल्य विहारी व  
लमंवारीसोतिने० ६० इति ग्ययीलेभा प्रयत्न  
वदातेभा कव्यरीतल गोडीवेदभीद्रहें पंचाली  
पुनजांनि लाटीओजप्रसादपुनिमाधुर्जीहिभी  
यांनि ६२ वाता इत चाररीतिनमें ओजप्रसाद  
माधुर्जगुनउपजैहें भारतमुनिभमतमेध्वन  
काव्यज्ञोंआतसहें ओजांमननेमतमें ये चारो  
तिआत्ममंनतहें प्रयोगोडी रंदिताजोगीका  
नजहाहोपुवडोसपास हरद्वंद्वच्यनामरे



गोडी कौं धास ८२ धाती टवर्ग ने बर्न होइ शो सें जो  
गी बरन होइ रेख सज्जारा गुह होइ बडो समोस होय  
अली छह बंदरना नै त हांगों दी होत है इहे पहावा न  
बिती बहवै हें सो गों दी के अंतर भरत है अचल  
मास जो सो कौं करि लेइ ते को मे ओ नही  
होइ रहे जान अर्थ मै लहि समास है सोइ ई  
दाती जो सो कौं इत्यादि कसम हें न होइ अर्थ कर  
ते मै निजो समास है बिहारी सो बौह नो  
होइ धाती के जये सो होइ बलै नंगा ते है



भा. वि.

८८

लोह तहै यह वीत पट आत कहें ॥ अथ प्रसन्न मे जो लोह  
तेजों ने जात है जै से पीय पार सग मन सुन्यौ पार  
स नौ ग मन इहां भौ जा नी ॥ ये माला करै माला  
को करै इहां भी को जा नी ॥ जै से न न बां न मारे न  
न बां न करै मारे इहां करि जा नी ॥ ये पा म सो को  
औ करि की यौ ॥ अर्थ जा नी ॥ ये की या मन हरि छे  
ग की या चे मन की हरि के ली ॥ ये मुख निब स वै न  
मुख ते निब स वै न इहां तौ ॥ ये लो ॥ अथ कर ल मे  
ने न रूप मे न नौ रूप ॥ अंग ॥ दाखि ॥ अंग ॥ अंग ॥







भा. वि.  
८६

इतहै इहां गौडीतिमैं ओज गुनहै ओपहु बाहु  
जियाहीमैं अंतर भूतहैं अथ बेह नील बससमा  
सबिसमास नाहि अक्षर सातु खार नाहट अरख  
लघुमधुर बेभी उच्चार ८६ जथा सोहत चंद  
नविंदु सो बंधुर आनन इंदु गहिगये श्रीमंदगात  
नौ नौ यग अरिबंद ८७ याता इहां थोरो समासहै  
सहत अनुस्वार बहुत बनेहै टवगी रहत है प्रलभुह  
इहां बेभी तिजमैं माधुर्गुन जैसै मेजुल नैन नीज  
बरमै इत्यादि विनमै टवगी नैन कहे बाहु बाहि



भाषा में ब्रह्मचर्य टक्करी न द्यारन ही चाहे तब गद्गोल  
आगालिखे हे सख्त इतने चरन भाषा में लिखे च  
विष्णु सुन्दर हत हे जया ते जो यष्टन परस्वन च  
नदवर्गी धराधार नाचो दोर सुमाय रख नही ता  
नवी संझार टैच वाती इहां भाषा में से जोगी लका  
रन चाही जे कवर्गी स्वरान चाही जे टक्करी न  
आरन चाही जे जहां श्रवण हो इतहां मन्त्राने पर  
जो यन्त्रा रहे सो इतिथि अब कारखो प्रोगे जहां मन्त्र  
ने परे बीषा न हो इतों प्रोकार लिख्यो हे जे से जे



मा. (चि.) जेभीन बराह जैजै जुगल किलोह इत्यादि सवा  
हं. आनी जे लखार के पहेली बक्रारु पाप के प्रांगे  
प्रो बारा होइ की छला सो मिलन बै बै स लिख्यो  
योह जैले मेरी भववाधा हरी इत्यादि विवेक  
दालि बेभाषा में तौं अस पि होय हो हे संसकत  
मे तौं अस च्याही जे यत्वा होत हे क्रकुर  
बेभी भाषा में नही हे उपनाग रिक्का वृत्ति या ब्रोक  
हत हे सोवे भी मैं अंतर भूत हे अथवा चाली  
गोडी वेद भी मिले वां चाली हे रीति अजत नह



असाद गुन सुचरित लखें करि सीति ॥ ६६ ॥ जया महा  
सर्व सुंदर विषया चाल रही ॥ अगछाई अंजन की से  
न्य नते चंदन सौ न लखाइ ॥ ६७ ॥ वाता इहां से जो  
गी वरन गोंडी सा नुस्चार वरन सौ बे दे भी मिले हे  
उन गंधो स्याम स्यामो सुकर लघो महार सपुंज  
पंअज पत्र सुसेन जह पुंजन मै ॥ चाले गुंज १ वाती  
इहां भी सजो गी सा नुस्चार है ॥ मथला दी लछन को  
कोमल पद जहो रहत है ॥ उपजत गुन परसाइ ॥ ६८ ॥  
सीति तह ॥ ६९ ॥ लला गा पद तल बांद ॥ ७० ॥ जया



भा. वि.

मधरमुद्याधारतेललाबोलतबोलसुबोललाल  
लाललोपनलालितलसतसुनीलानिबोल ३  
माता दोहामेंकोमलपहरेटचमीसंनोगीब्रैध्व  
नुअसनहीहै लादीमेंकोमलचत्रिअंतरभूतहै  
कोईकहतहैओकोईहैचारोरीतिसवदाअलबो  
हैअंतरभूतमानतेहैकोईतीतिबोचत्रिब्रहत  
हैअंतरअनुआस त्वरविनसमतावर्नकीअनु  
आसलंकारओमलमाननदीलगासुबहतसुब  
विविचरअवार्तास्वरीहोइदिंबोनहोरपह



आय हनहीं वरन की समता चाहि ॥ कोमल को  
नन को लेगी रहा स्वर समान नही वरन की समता है  
यह साधा हल धन ॥ यथा बिसेस वत चरे ॥ अनुप्रा  
स जहां सुवर्न ॥ अने वर की इष्ट वेर समत होइ हे छेना  
अनुप्रास सो सुर समता सम सोइ ॥ यथा ॥ यारे  
॥ प्रग ॥ अलग भौने नवै नर सबास कुंज मन बन भाव  
नं लगे वाहत हास विलास ॥ दीवानो ॥ अने वर  
॥ अकार मकार ॥ वकार इत्यादि वर्न की समता ॥  
हे ॥ यथा ॥ इत्यादि वर्न ॥ इत्यादि वर्न ॥ इत्यादि वर्न ॥



भा. नि. १  
६३

यत्र चारसमतामांनि वाननबले हेने ननु वः प्रान  
ननी एतमांनि ७ वाता रे न चारन श्री विं बाव  
हुवरन श्री प्रहुत चारसमता होत इहो न बाव श्री  
वहुत चारसमता हे पुनः लल चौ हे च व सौ ल  
ला चाहत च कलाना ति मदन सदन दर सत सु  
मन हर छि जल वे नि हरि ८ वाता इहा अने  
न चारन श्री अने न चारसमता हे अथ अथानु  
प्राप्त कहत अंत अनु शास हे जो अनु शास  
वारि जने नो वामि न विल सति धिये भास



धातीसवधं ह्वे० ज्ञानमे० प्रनुयात होत हे स्व० अ  
नुस्वार० गकार जै से वतै से ईर ईहा ग्यास० ग्यास  
बो० प्रनुयास जै से वं जन भं जन० प्रं जन रं जन इ  
त्पादि जांनी० ग० ग० ग० प्रनुयास अनुया  
स सुत न न जहा रे व न ग के होय वति मन भा  
वति है व धूल सत छी न जादि जोय १० वाती इ  
हो० वकार नकार मकार वकार ऐं व वी व हे अ  
स जांनी० ग० ग० ग० प्रनुयास अर्थ सहत जो  
पद प्री भा व भ द ज हं ज सो लादा प्रनुयास



भाषाचि  
ह ३

भाषासबकबिबो ११ जथा सेनाततीरकौं  
हेनलसीझीमाल सेवतलसीझीझहानहीतुल  
सीझीमाल १२ वाता होतनहीचहायहभावमे  
जानीग्ये १३ सलेषकर सुजसबढावतज  
तमेजेकुलमाहसप्रत भूरिग्येमे १४ वाता बढी  
यतझों अर्थउठावतभीह १५ कौलाटानुआसव  
या बंचनबरनीतोयके मुखहेसु धानिवासस  
धानिवाससुहेभहाजहांकुलं ब्रह्म १६ अ  
थजमज जमकजलरव गिरि अर्थगौरहेज



य जलैरजलः प्रायोसवीहंसहंसनलआय  
१५ वार्ता हंससरजः प्रोहंसहंसवर्षा मेहसताल  
नचमेनहीवर्ततहै यहनासिद्धे पुनविहारी  
जबहो. १६ वार्ता भजननामस्मरणप्रोभजन  
नामभाजिवेको सोनमः प्रोभजनस्मरणनन्नी  
यहजमकजानीमे १७ पुनहाययमास  
भसेजहापुनहन्तोपुनहन्तो यहभास भवति  
आमनकोहन्तोयकोइहन्त्रास १८ वार्ता  
सकोतीयकोयहपुनहन्तोपदाभासइहवांस



दोहा

आ वि० ५४ जानी० प्रे नारिन को छोड़ा दु न न पाति को मि न को  
मुख देत है महा सोम वा धारि है करे वा छे न सो  
है २८ वाती नारि को मिनी को नाम पुन रु न सो  
भा से है नारिन को छोड़े है प्रे से जानी० प्रे सो न्य व  
द को नाम है इहां भी सो म्य म लो सु भा व जानी० प्रे  
अथ प्रहे लिखा जहा रुट सो अर्थ सो प्रहो ले का  
ती स चरन मे ओ न ने न छे ती स चारि मु जा न प सो  
न को नो मुख देत असी स २८ आ को अर्थ स  
र्य जानी० प्रे चारि चरन मु जत न के व कर प ह न व



नही सीस दे मुझ जाके देवी यत ता क्रोवां हन ईस  
२० या क्रोवां जाके मुझ जा नीमिने ईस मुच अंतर  
लपि पाव हरलार पिदा इन क्रम त मै चित्राले कार  
हे अथ संध्या सुभ्यलंकार संसृष्ट सभूषन ज  
हां हैं निरपेक्ष वधानि ससि मुख तेरे इग ब्रमल  
पद्मे वहे मनुष्यानि २१ वाती इहां उपमा रूप  
उत्पेक्षा अथालंकार स्त्री संसृष्टि हे तिलतंडुल  
की तरह जुदा जुदा सी धति हे विहारा नुरत सुख  
२२ वाती इहां प्रतिमनुष्या सलो जो न्निषी संसृष्ट



भा. १८ (चि.) मध्यतीनतरे को संकर उक्त का ही है हे कौं जहां से  
हल बाहर इक पद मैं भूषन बहाने से संकर कहि जाय  
२३ जातों हे कौं प्रलंकार जहां से प्रलंकार को उ  
पकार कहें ओ जहां से हे लणों यह प्रलंकार है नि  
ग्रह गालंकार है ओ जहां से व पद में दो शतों न  
लंकार हैं इत हां संकर है इह तो नतर कौ संकर  
आय हे क प्रलंकार है क प्रलंकार को उ पकार क  
भी जानि तु व प्रारिबधानि केलीं ने भूषन आनि  
हार ला निह चि अक्षर इत न ज्यो सु गुं जौ जानि २४



वाती शहात सुनसो भ्रातया अलं भासु उपज्यो हे वि  
हारी बलबढ इवल कर थ ने नै न कुवित कुठार  
भात बाल उर जालरी घरी मे मत र डार २२ वाती  
शहात पक सों विसे सो न्नि उपज्यो हे बलबढ ई  
रुपक अंग विखे सो न्नि अंगी जानी अने कुवत कु  
ठार काट वेवों कारन हे जो बढ नौ हे भार्ज सो नही  
उपज्यो अथ सहे ह सो संकर पीय के नैन चकोर  
को उपजावत अंग नंद लखी नौ ल अमर महारा  
जत तो मुख चंद २६ तेरो मुख चंद मा सो राजि



भूषण

तहेनु प्रोपमा विंचा मुखतो ई चं इमा हेरु बने हेरु  
हसे हेरु मूल नही हमारो ही यधरौ तजो लला  
सब धान नैनानि को मुख देत इह इह विंव सरसात  
२७ वाली कां मको उड़ी पकरन वालों इह बाल  
है या बानि को वना इके रे कतर रह बहान है यात  
पर या यो न्नि प्रलंबा रहै विंचा साध्य पवसा नाल  
छना करि कै इह विंव सोना इका को मुख सखी पर  
नो यात हूप का तिस यो न्नि हे पर हसे हलो संभ  
रभयो गथा एक पद संभने न्नि प्रलंबा विहारी



उरलोने आति बंद पड़ी सुनि मुरली धुनि ध्याइ होइ  
लसी निद्र सी सुतो गयो हलसी लाइ ३२ वार्ता मु  
रली धुनि सुनि वो यह सुख को उद्यम की वो ना सोइ  
धम यो यातें विषमालंकार हलसी हलसी जम  
जा नीगे हलसी उत्प्रेषा भई अनुयास विषम  
लंकार की प्रतीति तुरत नहीं होति है याते सारः  
अथा अलंकार लघुत अर्थ सव्द करि करत है जोर  
सको उद्योग भूषन जैसे जीवकों सो कहि गे नंदा  
३३ जोर सव्द अर्थ की चिचका चिमका र



भाषाविम  
२१७

विदेत अलं चारतासौ कहै जै कवि सुमति निवेत  
३० अथ टीका चारकी इत्यती वर्नेन सालग्राम  
भी सरजु की मिली गंगहो धार अंतराल में देस  
हैं सो सारन सरकार ३१ दरग चा गो आतहां  
लसे चैन पुरग्राम तहां त्रयाठी रोम धन चास  
की यों अभिराम ३२ ताके सुत हरि कवि की यो  
मारवार मैं बास भाषा भूषन गंध्य को टीका  
रोषकास ३३ उराहरान दोने बहुत बुद्धवदव  
नभाज बुलेन बाल ब्रह्म पादिलिखि हे सुकवि



माजे ३० कविने झांझाझादि भाई भूख झाढत लु  
गाई रोम चुनवाढौं चमूं मे नहा हरो बुझाई हे रेनु  
हम वास वन वास मे न वास को हे रेख मीश हाते  
चीर चाहर सुहाई हे जैसे ही न स्याता मे परी हे  
लंछ पाता सुल्यो बोम न को ताता देव वार न ल  
गाई हे तीन लो न नाता भ न दी जो जैसे लख न भा  
ता तो सो को ई न रो न हा तार घुराई हे ३५ लख  
हा रि द जे द जं वारि ध सो ह व हा त गं ही हरि वां ह ज  
वीने यावत वारु क यो मर जे मंघ वा जे ल मान म



भा० वि०  
६८

हीपातिजीनो मोहनलालमोंतिनह्यालकोसोच  
बिनाजिनचेहें० वधीने होतोनजाकहिठब्रह्मदा  
ब्रह्मोहाटब्रह्मतिनमंदिरहीने ३६ दोहा पूरहि  
तश्रीनंदकेमुनिसांडिल्यमहान मैहोंतिनब्रह्मो  
तमैमोंहनमोजजमान ३७ भाषाहैसाईजह  
वरनैप्रभुगुनसार उंचौनीचोहोतहैंजहोनही  
निरधार ३८ संवतढारासेचितेतापरयोंतिसजा  
त टीकाकोंनीप्रसदिनगुरदस्मी० प्रवदात ३९  
तेओभाषाभखनटीकाचमत्कारचंद्रकासप्रस  
लिखतंदस्वरघोलपुरवासीमुझामपदप्यालेआपे



आपने मखाडे में दोहा राम इंड पुनि खंड रवि संचत  
शिव मजानि जे हसु ही छटि अर्द्ध ब्रौ लिख्यो गंय  
सुख सांनि १











पानासन